देशान्वेषण की सरल कथाएँ

सम्पादक
पी० एन० चक्रवर्ती,
बी० ए०, एल० टी, एफ० आर० जी० एस०
और
लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Printed and published by K Mittra, at The Indian Press I
Allahabad

विषय-सूची

विषय

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

मार्को पोलो

जन्म-स्थान—वेनिस, लगभग १२५० ई०,
मृत्यु—१३२३ ई०

मैन फेलिस का पैड़ोया पोतो

मार्को (मृत्यु १२८० में)	निकोलो	मैफियो

मार्को पोलो

हम उस समय की बात कहते हैं जब न तो रेलगाडी थी, न हवाई जहाज, न पैरगाडी और न मोटरकार। एक देश से दूसरे देश में जाना कठिन था। जगल, पहाड, नदी और मरुभूमि के अतिरिक्त डाकुओं का भी भय था। लोग चिर-काल के लिए विदा लेकर घर से निकलते थे। विदा के समय रोना-पीटना मच जाता था। सामान लादने के लिए ऊँट,

[illegible] था [illegible]। कभी कभी ये सवारी का [illegible]। [illegible] निकलना निरापद न था। बन्दूक [illegible], पर भाला तलवार और कृपाण आदि साथ रखना [illegible]। इतनी कठिनाइयों के होते हुए भी धर्म-प्रचारकों ने [illegible] कोई ढीला न किया। योरोप में ईसाई धर्म फैला हुआ था। ईसाइयों की, एशिया में भी, अपने धर्म का प्रचार करने की प्रबल इच्छा थी।

इटली प्रायद्वीप जो योरोप के दक्षिण में है, उस समय बड़ा ही प्रसिद्ध था। धर्म शिक्षा, वाणिज्य प्रभृति प्रत्येक विषय में इटली प्रायद्वीप, भारतवर्ष के ही सदृश, विख्यात था। यहाँ का धर्मकेन्द्र रोम नगर था। प्रधान धर्मयाजक यहीं रहा करते थे। धार्मिक विषयों में इन्हीं का मत सब ईसाई मानते थे। इनके अधीन अन्य धर्म प्रचारक पादरी थे। दूर देशों में ये ही लोग जा जाकर धर्म का प्रचार करते थे। शारीरिक कष्टों और विपत्तियों को, धर्म के निमित्त, ये तुच्छ समझते थे। जिस प्रकार रोम धर्म का केन्द्र था उसी प्रकार वेनिस वाणिज्य का केन्द्र था। शेक्सपियर की प्रसिद्ध पुस्तक 'मर्चेंट आफ वेनिस' का नाम कदाचित् तुमने सुना होगा। शाइलाक वेनिस का ही रहनेवाला था। वेनिस के जहाज भूमध्यसागर के किनारे के हर प्रान्त में व्यापार के निमित्त पहुँचा करते थे। प्राकृतिक स्थिति के विचार से भी यह एक अच्छा वाणिज्य-केन्द्र था। मानचित्र में देखो—

यह एड्रियाटिक सागर के उत्तरी किनारे पर, भूमध्यसागर के आधे मार्ग में, एक अच्छा बन्दरगाह है। और, आल्प्स के दर्रे बहुत दूर न होने के कारण यहाँ से मध्य योरोप की व्यावसायिक वस्तुएँ सुगमता से एशिया को भेजी जा सकती हैं और वहाँ की वस्तुएँ यहाँ लाई जा सकती हैं।

निकोलो वेनिस नगर का ही रहनेवाला था। यह धर्म और वाणिज्य की बढ़ती के निमित्त, अपने भाई मैफियो के साथ, सन् १२५० ई० में एशिया की ओर चल दिया। पुत्र-स्नेह भी इस कार्य में बाधक न हुआ। इसका पुत्र मार्को पोलो, जो इसी वर्ष वेनिस नगर में जन्मा था, अभी एक वर्ष का न होने पाया था कि निकोलो को धर्म और वाणिज्य की सूझ ने घर बैठने न दिया। वह इस बच्चे को छोड़ टर्की की राजधानी कुस्तुनतुनिया होता हुआ, बहुत दिनों के पश्चात्, बुखारा जा पहुँचा। पर वहाँ उसकी भाषा कौन समझता? वहाँ मुगलों की भाषा बोली जाती थी। निकोलो ने देखा कि यदि वह मुगल भाषा नहीं सीखता है तो धर्म प्रचार और वाणिज्य के कार्य में सफलता नहीं हो सकती। इसलिए वह इस भाषा को सीख कर फारस के राजदूत के साथ कुबलईखाँ की राजधानी की ओर चल निकला।

कुबलईखाँ गेंगिसखाँ का पौत्र था। वह एक विस्तृत राज्य का शासक था। तातारियों ने १३वीं सदी में मंगो-लिया के पठार से इधर चीन तक, जिसको कैथे भी कहते हैं,

और ग्धर नागप मे रुदेरी तक अपना राज्य फैला लिया था। इस साम्राज्य की राजधानी सिङ्गन पहाड पर शांगटू नगर म था। यह सम्राट् वडा प्रतापशाली था। इसने विदेशियों के हाथ आवभगत का और सौ पादरियों को निमत्रण भेजा कि वे उसके राज्य म आवें और तातारियों को अपनी विद्या और बुद्धि के बल से ईसाई बनावें। इस निमत्रण-पत्र को लेकर निकोलो अपने भाई के साथ, १६ वर्ष के पश्चात्, सन् १२६६ ई० में घर लौट आया।

यहाँ प्रधान धर्म-याजक का देहान्त हो चुका था और पादरी लोग विदेश जाने को प्रस्तुत न थे। इसलिए ३ वर्ष तक अपने देश में रहने के पश्चात् निकोलो अपने भाई मैफियो, पुत्र मार्को पोलो और केवल दो पादरियों को साथ लेकर एशिया के पश्चिमी प्रान्त सीरिया में पहुँचा। उसने कुबलईखाँ के लिए जरुसलम के पवित्र मन्दिर के दीप से तेल ले लिया, क्योंकि कुबलईखाँ ने प्रधान धर्म-याजक को इस तेल के लिए भी लिखा था। इस समय वहाँ पर विदेशियों ने आक्रमण कर रक्खा था। इस कारण पादरी लोगों को इतनी घबराहट हुई कि उन्होंने आगे बढना पसन्द न किया, वे लोग इटली लौट गये। साढे तीन वर्ष चलने के पश्चात् निकोलो, मार्को पोलो और उसका चचा मैफियो कुबलईखाँ के दरबार में दूसरी बार पहुँचे। कुबलईखाँ इस समय कंमेनफु नगर था। यह नगर अब शांगटू के नाम से प्रसिद्ध है। य



कुवलाखों का एक डाकिया

चीन की दीवार के बाहर पेकिंग नगर से ३६७ मील दूर है। आजकल हम यहाँ रेल से जा सकते हैं।

कुबलईखाँ को इनसे मिलने की आशा न थी। पर ३½ वर्ष के पश्चात् इन लोगों को देखकर वह बहुत ही सन्तुष्ट हुआ। उसके बुलाये हुए १०० पादरी तो नहीं आये थे पर नवयुवक मार्को पोलो को देखकर उसके आनन्द की सीमा न रही।

मार्को पोलो ने अब कई भाषाओं के सीखने का निश्चय किया। थोड़े ही समय में उसने मगोल, फारसी और तिब्बती भाषाएँ सीख लीं। कहानी लिखने और कहने की शक्ति उसमें अद्भुत थी। यहाँ तक कि कुबलईखाँ ने एक बार इसके लिए यह कहा था कि यदि यह जीवित रहा तो एक प्रसिद्ध मनुष्य होगा। कुबलईखाँ ने नवयुवक मार्को पोलो को चीन और भारतवर्ष में कई बार भेजा। इसके अतिरिक्त मगोलिया की राजधानी, कराकोरम, सियाम्पा, जो दक्षिणी इंडोचीन में है, सुमात्रा और फारस की खाड़ी में भी वह भेजा गया था। उसे बड़े बड़े पदों पर उसने नियुक्त किया। इसी समय मार्को पोलो ने चीन के प्रत्येक प्रान्त को भली भाँति देखा और आश्चर्यजनक बातों को लिख लिया।

चीन में पहले पहल यही योरोपनिवासी गया था। इसने तातारियों के विषय में लिखा है "ये लोग एक स्थान ... बहुत दिनों तक नहीं टिकते। ऋतुपरिवर्तन के

ये भी स्थानपरिवर्तन करते हैं। शीतकाल में ये लोग दक्षिण के एक उष्ण प्रदेश में चले जाते हैं जहाँ इनके पशुओं के चरने को घास होती है और ग्रीष्मकाल आते ही उत्तर की ऊँची और ठण्डी जगहों में चले जाते हैं। यहाँ इनके पशुओं के लिए घास और पानी पर्याप्त मिलता है। मच्छरों का भी उपद्रव अधिक नहीं होता। इनके साथ डेरा होता है जिसको लिए हुए ये लोग देश देशान्तर का भ्रमण करते हैं। इनका मुख्य धन गाय, बैल, बकरा, बकरी, भेड़, ऊँट और घोड़े हैं। इन जानवरों के गल्ले हजार दो हजार से कम नहीं होते और इनका एक जगह रखना कठिन होता है। एक स्थान की घास समाप्त हो जाने पर इनको दूसरी जगह ले जाना पड़ता है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि राज्य में कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है। सड़कें अच्छी हैं, उनके किनारों पर पेड़ लगे हुए हैं। इससे गर्मियों में छाया रहती है और जाड़ों में जब धरती बरफ से ढक जाती है तब इन पेड़ों से रास्ता प्रकट होता है। पचीस मील के अन्तर पर धर्मशालाएँ होती हैं। वहाँ चार सौ घोड़े सर्वदा प्रस्तुत रक्खे जाते हैं, क्योंकि राजदूतों को न जाने कब इनकी आवश्यकता हो। चिट्ठी-पत्री भेजने का भी प्रबन्ध है"। तुमने देखा होगा कि आज-कल गाँवों में डाकिया, डाक ले जाते समय, कैसे घुँघरू बजाता हुआ जाता है। इसी प्रकार उस समय भी, हर तीन मील पर, ऐसे डाकिये कमर में घुँघरू बाँधकर डाक लिये हुए दौड़ते और एक दूसरे

को अपनी डाक दे देते थे। निर्दिष्ट स्थान पर, बिना अधिक श्रम के, डाक पहुँच जाती थी। राज्य में कोयला, मिट्टी का तेल और अन्य खनिज पदार्थों की भी कमी न थी। राजमहल के बारे में लिखा है कि राजा ऐसी संगमरमर की कोठी में रहता था जिसके कमरे स्वर्णमण्डित थे।

मार्को पोलो चीन के सौन्दर्य पर मुग्ध तो अवश्य था पर घर से निकले उसे बहुत दिन हो गये थे अत वहाँ से लौटने के लिए वह व्याकुल हो उठा। परन्तु कुबलईखाँ उसको इतना चाहता था कि उसे घर नहीं जाने देता था। अन्त में ईश्वर की कृपा हुई। सन् १२९१ ई० में फारस के वृद्ध सम्राट् की रानी का देहान्त हो गया और उसने कुबलईखाँ की कन्या से पाणिग्रहण करना चाहा। कुबलईखाँ की बेटी उस वक्त केवल १७ वर्ष की थी। इतनी दूर की स्थलयात्रा असम्भव समझकर कुबलईखाँ ने इन वेनिस-निवासियों को, जो समुद्रपथ को जानते थे, लड़की पहुँचाने का भार सौंपा।

कुबलईखाँ की बेटी के साथ चीन होते हुए ये लोग फोकीन, जो प्रशान्त महासागर के किनारे पर है, पहुँचे। वहाँ से समुद्र-यात्रा आरम्भ हुई। हजार मनुष्यों को लेकर १३ जहाज तीन महीने तक चलते रहे। अन्त में सुमात्रा द्वीप दिखाई पड़ा। ६०० नाविकों का देहान्त हो चुका था और मार्ग भी बहुत तय करना था। पर मार्को ने [illegible] बढ़ाया। तुमने नकशे में सिंगापुर का बन्दरगाह [illegible] ये लोग

सिंगापुर होते हुए सीलोन के दक्षिण में पहुँचे और वहाँ से भारतवर्ष के पश्चिमी तट के निकट से होते हुए ओरमज पहुँचे। तब तक आर्गन की मृत्यु हो चुकी थी। इसलिए उसके पुत्र घजन ने राजकुमारी के साथ विवाह कर लिया। अब मार्को को घर जाने का अवसर मिल गया। उसे दो परवाने (अनुमति-पत्र) मिले। जलमार्ग छोड़कर ये लोग सीधे स्थल-पथ से काले सागर के किनारे ट्रेबीजांड नगर में पहुँचे। यहाँ फिर इनको एक जहाज मिला और ये वेनिस की ओर चल दिये।

सन् १२९५ ई० में जब ये वेनिस पहुँचे तो वहाँवालों ने न तो इनको पहचाना और न इनकी बातों पर विश्वास ही किया। मार्को ने एक दिन अपने भाई-बन्धुओं को न्योता भेजा। जब सब लोग आये तो वह मखमल के कपड़े पहनकर निकला। उनके खा पी चुकने पर उसने रेशम के कपड़े पहने और मखमल के कपड़े बाँट दिये। अन्त में जब लोगों की विदाई का समय आया तब उसने फिर नये कपड़े पहन लिये और रेशमी कपड़े बाँट दिये। इस अमीरी चाल पर लोग बड़े ही आश्चर्यान्वित हुए। पर उन्हें अब तक एशिया के धन के किस्से सत्य प्रतीत न हुए थे कि इतने में मार्को ने अपना एक पुराना कपड़ा फाड़ डाला और उसमें से बहुमूल्य हीरे, मोती, पन्ना आदि निकालकर वह बाँटने लगा। अब भला किसको विश्वास न होता? एशिया की बहुमूल्य वस्तुओं को देखने के लिए मार्को के घर में भीड़ लग गई।

कुछ दिनों के पश्चात् वेनिस और जिनेवा में युद्ध प्रारम्भ हुआ। यहाँ मार्को पोलो एक जहाज का नायक बना दिया गया। किन्तु सन् १२९८ ई० में वह बन्दी बनाकर जिनेवा के कारागार में भेज दिया गया। इसी कारागार में इसने एशिया का पूरा वृत्तान्त, एक साथी कैदी से, लिखवाया। इस कैदी का नाम रस्टिसियाना था। यह 'पिसा' का रहने-वाला था। कारागार से छूटते ही मार्को पोलो वेनिस गया और वहाँ ग्रैंड कौंसिल का सदस्य बना दिया गया। एशिया के विवरण का इसने फिर फ्रेंच भाषा में अनुवाद करवाया परन्तु उसे छपवा न सका।

सन् १३२३ ई० में इसका देहान्त हो गया। मृत्यु के बाद सन् १५५९ ई० में इसका 'एशिया के भ्रमण का विवरण' छापा गया। इस विवरण को पढ़कर योरोप के अन्य प्रान्तों के लोगों को भारतवर्ष और पूर्वी देशों के देखने की प्रबल इच्छा हुई। तुमने वास्को डि गामा और कोलम्बस का नाम सुना होगा। इनके बारे में तुम्हें फिर बताया जायगा।

प्रिन्स हेनरी नाविक

जन्म स्थान—आपार्टो, १३९४ ई०,
मृत्यु—१४६३ ई०

मार्को पोलो के पश्चात् और कई भ्रमणकारी एशिया में आये और कुछ दिनों तक भ्रमण करके अपने देश को लौट गये। इनमें वेनिसनिवासी फ्रायर ओडोरिक और टैंगियर-निवासी इब्न बतूता प्रसिद्ध हैं। इन सबने अधिकतर स्थलमार्ग से ही देश भ्रमण किया। पर हम जिनके विषय में लिख रहे हैं उन्होंने जलमार्ग से ही दूर दूर तक जाकर नये नये देशों का पता लगाया था। कारण क्या था? वेनिसवाले भी तो भूमध्यसागर के भिन्न भिन्न प्रान्तों में अपना माल ले जाते और वहाँ की वस्तुएँ अपने देश में लाते थे। दूर देशों में जाने का प्रयोजन भी यही था।

तुमने पढ़ा होगा कि एशिया के स्थल-मार्ग निरापद न थे। लुटेरों से बचना कठिन था और समुद्र की यात्रा से सब लोग डरते थे। इस विषय में बहुत सी अद्भुत कहानियाँ भी रची गई थीं। एटलांटिक महासागर के विषय में कुछ लोग कहते थे कि यह जल-दैत्यों से भरा हुआ है, कोई इसे साँपों से भरा हुआ बताते, और कोई कहते कि



प्रिन्स हेनरी नाविक

सूर्य इतना प्रचण्ड है कि आदमी वहाँ जाते ही [illegible] जाते हैं। ऐसे समुद्र में लुटेरे कहाँ? फिर समुद्र-मार्ग में [illegible] भी थे। समुद्र में न रेगिस्तान है, न पहाड़, न [illegible] और न झील या नदी-नाले। एक बार चल दिये [illegible] नहीं। उसके द्वारा भारी भारी वस्तुएँ भी [illegible] में लाई जा सकती थीं। परन्तु योरोपवालों के [illegible] में सबसे बड़ा लाभ यह था कि उन्हें मुसलमानों [illegible] नहीं देना पड़ता था। वैसे तो एशिया और अफ्रिका में मुसलमान योरोपवालों से अपनी वस्तुओं के देने में [illegible] अतिरिक्त कर भी लेते थे। जब तक समुद्री मार्ग का [illegible] था तब तक ये लोग भी विवश थे। परन्तु [illegible] मूर-शासन से छुटकारा पा चुके थे। अतएव [illegible] पर उनका भी ध्यान गया।

स्थिति के विचार से इनको [illegible] की सुगमता थी। पूर्व में भूमध्यसागर और [illegible] अटलांटिक महासागर होने के कारण ये इस कार्य के लिए योग्य भी थे। धार्मिक उत्साह की भी इनमें कमी न था। इस समय इनको एक राजा भी अच्छा मिल गया था। राजा जॉन ने (१३८३-१४३३) इस स्फुरण को [illegible]। इन्होंने [illegible] राजकुमारी, जॉन आफ गांट की कन्या, से विवाह [illegible] लिया। उससे इनके पाँच लड़के [illegible]। छोटा लड़का ओपोर्टो में, सन् १३९४ में, जन्मा।

हेनरी बड़ा मातृभक्त, देशभक्त और धार्मिक था। मूर लोगों को पराजित करने का इसका प्रण था। एक बार जब यह सेना लेकर चलने लगा, इसकी माँ बीमार हो गई और इसको रुकना पड़ा। मरते समय इसकी माँ ने भी इसको मूर विजय के लिए अनुमति दी थी। माता के मृतक-संस्कार के बाद इसने अपनी सेना सहित सन् १४१५ ई० में जिब्राल्टर के दक्खिन सिउटा पर आक्रमण किया और इस मूर भूमि को जीत लिया।

इस जीत के बाद हेनरी पुर्तगाल लौट आया और केप सट विसेंट के निकट समुद्रतट पर नौ चालन और समुद्र-यात्रा के विषय में पढ़ने और पढ़ाने लगा। उसने बहुत से नक्शे एकत्र किये और अपने नाविकों को मैरिनर्स कम्पास (कुतुबनुमा) का उचित प्रयोग सिखाया और आकाश-विज्ञान भी सिखाया। इस विद्या को सीखने यहाँ दूर दूर से नाविक आये और उन्होंने बहुत लाभ उठाया। धार्मिक उत्साह इसमें था ही। जब मूरों से इसने सहारा के दक्षिणी भाग के विषय में सुना और उनको वहाँ का माल—खजूर, सोना, हाथीदाँत, छुहारे आदि—लाते देखा तो इसके मन में उक्त प्रदेश में समुद्र-मार्ग से पहुँचने की प्रबल इच्छा हुई।

कई वर्षों तक यह अपने कप्तानों को इधर-उधर भेजता रहा और उनकी जानकारी से लाभ उठाता रहा। इसने चाहा कि अफ्रिका के ध्रुव-दक्षिण को पार कर भारत की राह

खोज निकाले। इसी खोज मे इसने अपनी सारी अवस्था बिता दी। परन्तु एक आकाश-विज्ञान की जानकारी से ही लाभ नहीं हो सकता था। इसी कारण इसने एक प्रकार के ऐसे जहाज बनवाये जिनसे दूर की यात्रा किसी सीमा तक निरापद हो सकती थी। इन जहाजों को कैरावेल कहते हैं।

सन् १४१५ ई० से १४३० ई० तक पुर्तगाल के नाविकों ने कैनरी द्वीपसमूह और मडिरा को अपना लिया। यहाँ के लकडी के व्यवसाय से इनको बडा लाभ हुआ। इसके पश्चात् कई एक कैरावेल कप बोजाडार के दक्षिण की ओर भेजे गये। सन् १४३४ ई० म हेनरी का एक कप्तान भी बोजाडोर के दक्षिण पहुँचा। सन् १४३५ ई० में बोजाडोर से पाँच सौ मील दूर ये लोग राया डी आरा तक पहुँचे। सन् १४४१ ई० मे पहली बार इन्होने कप ब्लाको पार किया। यहाँ कुछ काले आदमियों से भेंट हुई। य आदमी बहुत ही बदसूरत थे। इनकी नाक चपटी, आँखें छोटी छोटी और होठ फूले हुए थे। अपने शरीर को इन लोगों ने गोदने के चिह्न से भर लिया था। बदन पर कोई कपडा न था। केवल लँगोटी लगाये रहते थे। हाथ म या तो भाला था, या खड्ग, या तीर-धनुष। बोली इनकी अद्भुत थी। प्राय ये लोग विदेशियों से इशारे से ही बातें करते थे। इनका मुख्य भोजन पशुओं या मनुष्यों का मांस था और इन्हीं का शिकार करना इनका पेशा था। अब ये लोग बन्दी क

गये। एक कुटुम्बियों ने उनको छुड़वाने के लिए इन परदेशियों को बहुत सा सोना दिया, जिससे मालामाल होकर जब ये घर लौटे तो लोगों ने इनकी बड़ी आवभगत की और हेनरी के इस उद्योग की प्रशंसा हुई। पर इसका फल विपरीत हुआ। पुर्तगालवालों का अब इन काले आदमियों के पकड़ने का ही ध्यान रह गया, और देशों का पता लगाने में अधिक उन्नति न हो पाई। हेनरी के निकट जब ऐसे बन्दी आ जाते थे तो उनको वह शिक्षा देता था और ईसाई बना लेता था।

सन् १४४५ ई० में नाविकों को कुछ खजूर के पेड़ देख पड़े। इससे उन्होंने सोचा कि रेगिस्तान की अन्तिम सीमा आ चुकी। वास्तव में ये लोग केप वर्डस में पहुँचे थे। यहाँ इनको फिर काले आदमी मिले। ये लोग बहुत ही अद्भुत किश्तियों में बैठे हुए थे। ये किश्तियाँ ताड़ के पेड़ों का तना खोखला करके बनाई गई थीं। किश्तियों को ये लोग अपने पैरों से खे रहे थे। पुर्तगाल के कैरावेल जहाजों को देखकर इन्होंने समझा कि कोई बड़ी चिड़िया आ रही है और ज्यों ज्यों ये निकट आते गये त्यों त्यों इनका भय बढ़ता गया और ये लोग किनारे की ओर भाग गये। कुछ देर के पश्चात् भाला और खड्ग लेकर बहुत से काले आदमी समुद्र-तट पर आ खड़े हुए। तब जहाजों से उतरना निरापद न समझकर पुर्तगाली लौट गये।

हैनरी ने अब की बार बहुत से जहाज इसी दिशा में भेजे। इससे थोड़ा बहुत खोज का काम होता रहा। सिनेगाल नदी का भी पता लग गया। पर लोग अनजान देश में जाने से डर और स्वदेश को लौट गये।

सन् १४५५ और १४५६ ई० में वेनिस निवासी कैडामोस्टो, जो हेनरी का नौकर था, गैम्बिया नदी के पास पहुँचा। उसने वहाँ के लोगों से मेल कर लिया। सन् १४५८ ई० में हेनरी ने डीगो गोमेज को अन्तिम बार भेजा। इसने सियरालियोने की सोने की खानों का पता लगा लिया। हेनरी ने अब एक सुन्दर नया नक़शा भी बनवा लिया था। पर सन् १४६३ में इसका देहान्त हो गया।

गये। इनके कर्मियों ने उनको छुड़वाने के लिए इन परदेशियों का बहुत सा माल दिया, जिससे मालामाल होकर ये घर लौटे तो लोगों ने इनकी बड़ी आवभगत की और इनके इस उद्योग की प्रशंसा हुई। पर इसका फल विपरीत हुआ। पुर्तगालवालों का अब इन काले आदमियों के पकड़ने का ही ध्यान रह गया, और देशों का पता लगाने में अधिक रुचि न रह पाई। इनके निकट जब जब बन्दी या माल हो जाता, वह गिरजा देता था और ईसाई बना लेता था

सन् १४४५ ई० में नाविकों को कुछ खजूर के पेड़ देख पड़े। इससे उन्होंने सोचा कि रेगिस्तान की अन्तिम सीमा आ चुकी। वास्तव में ये लोग केप पामस में पहुँचे थे। यहाँ इनको फिर काले आदमी मिले। ये लोग बहुत ही अद्भुत किश्तियों में बैठे हुए थे। ये किश्तियाँ ताड़ के पेड़ों का तना खोखला करके बनाई गई थीं। किश्तियों को ये लोग अपने पैरों से खे रहे थे। पुर्तगाल के कैरावेल जहाज़ों को देखकर इन्होंने समझा कि कोई बड़ी चिड़िया आ रही है और ज्यों ज्यों ये निकट आते गये त्यों त्यों इनका भय बढ़ता गया और ये लोग किनारे की ओर भाग गये। कुछ देर के पश्चात् भाला और अस्त्र लेकर बहुत से काले आदमी समुद्र तट पर आ खड़े हुए। तब जहाज़ों से उतरना निरापद न समझकर पुर्तगाली लौट गये।

हेनरी ने अब की वार बहुत से जहाज इसी दिशा में भेजे। इनसे थोड़ा बहुत ख्याज का काम होता रहा। सिनेगाल नदी का भी पता लग गया। पर लोग अनजान देश में जाने से डर और स्वदेश को लौट गये।

सन् १४५५ और १४५६ ई० में वनिस निवासी कैडामोस्टो, जो हेनरी का नौकर था, गैम्बिया नदी के पास पहुँचा। उसने वहाँ के लोगों से मेल कर लिया। सन् १४५८ ई० में हेनरी ने डोगो गोमेज को अन्तिम बार भेजा। इसने सियरालियोने की सोने की खानों का पता लगा लिया। हेनरी ने अब एक सुन्दर नया नकशा भी बनवा लिया था। पर सन् १४६३ में इसका देहान्त हो गया।



बार्थोलोमो डियाज

मृत्यु—सन् १५०० ई०

हेनरी की मृत्यु के पश्चात् नये देशों के खोजने का कार्य शिथिल हो गया। एक-आध उत्साही युवक अब भी जहाज लेकर समुद्र-यात्रा करके थोड़े से स्थानों का पता लगाता रहा, लेकिन इन लोगों का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत नहीं था। किसी बड़े स्थान का पता लगा भी नहीं। सन् १४७१ ई० में फरनानडोपो ने एक द्वीप का आविष्कार किया और अपने नाम से उसको प्रसिद्ध किया। फिर उसने विषुवत रेखा को भी पार किया।

सन् १४८१ ई० में जॉन द्वितीय पुर्तगाल की राजगद्दी पर बैठा और फिर खोज का कार्य आरम्भ हुआ। सन् १४८४ ई० में डीगो काव कान्गो नदी के मुहाने तक पहुँचा। उसने वहाँ अपना ऐसा सिक्का जमाया कि वहाँ का राजा उसके कहने से ईसाई हो गया। सन् १४८६ ई० में डीगो काव वालविश की खाड़ी तक पहुँच गया।

उधर बार्थोलोमो डियाज दो जहाजों को लेकर सन् १४८६ ई० में अफ्रिका के दक्षिण की ओर चल पड़ा। जहाँ तक हो सका, उसने पश्चिमी किनारे से अधिक दूर अपना

जहाज न रक्खा। फल यह हुआ कि इस यात्रा में बहुत दिन लग गये और अन्त में यह आरेंज नदी के मुहाने के पास पहुँचा। अफ़रीका के दक्षिण अब सर्दी अधिक मालूम होने लगा। यहाँ जलधारा वेगवती थी। आँधी भी प्रचण्ड थी। डियाज के जहाज अब किनारे से बहुत दूर हो गये और १५ दिन तक किनारे का कुछ भी पता न चला। डियाज पूर्व की ओर चलकर फिर उत्तर की ओर चला। अब भूमि दृष्टिगोचर हुई। यह मोसेल की खाड़ी में पहुँच गया। अब उससे पूर्व एक दूसरी खाड़ी में पहुँचा जो अलगोआ बे के नाम से विख्यात है। फिर यह ग्रेट फिश रीवर के मुहाने तक गया पर इसके साथी घर लौटने के लिए व्याकुल हो गये थे, इससे इसको घर वापस आना पड़ा। लौटते समय यह किनारे के निकट ही निकट चला और उस अन्तरीप को, जिसको लोग बहुत दिनों से पार करना चाहते थे परन्तु पार नहीं कर सके थे, इसने पहली बार देखा। अब सब लोग बड़े ही आनन्दित हुए और इस समाचार को पहुँचाने के लिए वापस आये।

यहाँ राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने इस अन्तरीप का नाम केप आफ टेम्पेस्ट रखना उचित न समझकर उसका नाम कैबो डी विडना एस्परेन्ज़ा या केप आफ गुड होप रख दिया। वास्तव में उसने सोचा कि अब पुर्तगालवालों के लिए भारत और पूर्वी देशों का मार्ग खुल गया।

लोगों को अब एटलांटिक महासागर से होकर एशिया जाने की सूझी और ऐसे ही किसी प्रलय मे ब्रेजील की ओर जाते समय सन् १५०० ई० के लगभग डियाज ने आँधी में अपने प्राण खो दिये।



[illegible]

वास्को डि गामा

जन्म-स्थान—साइन्स, मृत्यु-स्थान—कोचीन

वास्को डि गामा का जन्म सन् १४ ८ ई० के लगभग पुर्तगाल के साइन्स नगर में हुआ था। इसकी बाल्यावस्था की बातें हमें मालूम नहीं। इसकी प्रसिद्धि उस समय हुई जब इसने डियाज के पश्चात् केप आफ गुड होप को पार किया और भारत की नई राह निकाली। स्पेन के राजा ने कोलम्बस को एटलांटिक का पश्चिमी किनारा ढूँढ़ने की अनुमति दी थी। उसकी यात्रा के बाद जब यह प्रसिद्ध हो गया कि वह चीन पहुँचा है तो पुर्तगाल के राजा इमनुयल ने सन् १४९७ ई० में वास्को डि गामा को चार जहाजों के साथ डियाज का कार्य पूरा करने के लिए भेजा। वास्को डि गामा ने अफ्रिका के किनारे किनारे चलना पसन्द न किया, क्योंकि उसमें अधिक दिन लग जाते। वह गल्फ आफ गीनी को छोड़ साधा आरेंज नदी के दक्षिण जा पहुँचा। वहाँ से केप आफ गुड होप को पार करता हुआ वह ईसा के जन्म के दिन नेटाल के पूर्वी किनारे पर जा रुका और वहाँ से मुजैम्बिक के किनारे पहुँचा। वहाँ से मुम्बासा होता हुआ मलिन्दा में आया। मार्ग में साथी लोग बीमार पड़ गये। मुम्बासा में वहाँ के

लोगों ने इससे कुछ रोक टोक की किन्तु ईश्वर की कृपा से मलिन्दा के राजा ने इसका आदर किया। इस राजा ने वास्को डि गामा को भारतवर्ष का समुद्री राह बताने के लिए एक नाविक साथ कर दिया। २० दिन के पश्चात् सन् १४९८ ई० में मई महीने में कालीकट के पास इसका जहाज पहुँचा।

कालीकट का नाम तुमने सुना होगा। यह बहुत पुराना तिजारती स्थान है। भारत के दूर प्रान्त से व्यवसायी लोग यहाँ अपना माल लाते और विदेशियों से वाणिज्य-व्यवहार करते थे। यहाँ के 'क्यालिको' कपड़े की ख्याति दूर दूर देशों तक फैली हुई है।

यहाँ वास्को डि गामा को अधिक कष्ट नहीं हुआ, क्योंकि यहाँ के राजा जमोरिन ने इसके साथ अच्छा बर्ताव किया। वह यहाँ की कुछ वस्तुएँ—मसाला, कपड़ा इत्यादि—मोल लेकर घर लौट चला। मार्ग में इसके साथी फिर बीमार पड़े, कुछ लोग मर भी गये। दो वर्ष पश्चात् सन् १४९९ ई० में ये लोग लिस्बन पहुँचे।

सन् १५०२ ई० में यह बीस जहाजों के साथ दुबारा भारतवर्ष में आया। लौटते समय इसने मुसलमानों के १३ सौदागरी जहाजों को भारत सागर में बन्दी कर लिया। सन् १५०३ ई० में यह पुर्तगाल लौट गया और वहाँ काउंट आफ विडिक्वरा बना दिया गया। इसके पश्चात् कुछ दिनों तक इसकी पूछ-ताछ न हुई। इसी समय पुर्तगालवालों

ने कई बार भारत पर आक्रमण किया और गोआ तथा कालीकट ले लिया। अपने साथ वाणिज्य-व्यवहार के लिए भी इन लोगों ने भारतवासियों को बाध्य किया। सच तो यह है कि उन दिनों भारत सागर के प्रत्येक ओर पुर्तगालवाले ही दिखाई पड़ते थे।

सन् १५२४ ई० में, २१ वर्ष के पश्चात्, राजा जॉन तृतीय ने इसको भारत में पुर्तगाल-राज्य का राजप्रतिनिधि बना दिया। दुर्भाग्यवश वास्को डि गामा को अधिक दिनों तक यह सुख न मिल सका। सन् १५२५ ई० में कोचीन में इसका देहान्त हो गया।

क्रुस्टोफर कोलम्बस

जन्म—१४४० ई० के लगभग, मृत्यु—१५०६ ई०

डामेनिको कोलम्बो = सुसाना

क्रुस्टोफर कोलम्बस (जन्म १४४७)	गियाना (जन्म १४४८)	बार्थोलामेो (जन्म १४५०)	अभी (जन्म १४६४)	जेम्स ग्याकोमो (जन्म १४६८)

कोलम्बस जिनवा नगर के एक ऊनी माल के कारीगर कोलम्बो का पुत्र था। उसका जन्म जिनेवा में हुआ। कुछ लोगों का मत है कि उसका जन्म १४४७ ई० के लगभग हुआ। यहाँ उसने मार्को पोलो की पुस्तक पढ़ी और उसको देश भ्रमण तथा नये स्थानों का पता लगाने की इच्छा बहुत ही प्रबल हुई। फिर क्या था, २४ वर्ष की अवस्था में ही पेरिस नगर में जाकर उसने ज्योतिष-शास्त्र और नौ विद्या का अध्ययन आरम्भ किया। इसी समय उसने पुर्तगाल के राजा हेनरी के बारे में सुना, पर दुर्भाग्य-वश सन् १४६३ में हेनरी का देहान्त हो गया था। उसने भूगोल की कई पुस्तकें भी पढ़ी और 'इमागो मुंडी' ग्रंथ को पढ़ते ही उसे भारत में पश्चिमी राह से पहुँचने की प्रबल इच्छा हुई, पर अर्थ और सामर्थ्य का अभाव



कोलम्बस

को अफ्रिका के पश्चिमी तट का हाल मालूम हो गया। वह कुछ समय तक अपनी ससुराल में रहा। वहा उसने पुर्तगाल के नाविकों से बहुत कुछ सुना और सीखा। खोज की इच्छा बढ़ती ही गई। उसने सोचा कि यदि एशिया में पूर्वी राह से पहुँच सकते हैं तो पश्चिमी मार्ग से भी पहुँच सकेंगे और एटलांटिक का पार करना असम्भव न होगा।

इटली का रहनेवाला टास्केनेली आकाश-विज्ञान का पण्डित था। कोलम्बस ने उसको पत्र लिखा। उसने इसको यह बताया कि पुर्तगाल का राजा भी पश्चिम ओर से भारत जाने की राह का पता लगाना चाहता है। उसने इसको अपना भू-चित्र भी दे दिया। अब इसको नवीन जगत् की खोज की धुन बढ़ती ही गई।

एक दिन इसने कुछ वृक्षों को, जिनमें चिह्न लगे थे, और मुर्दा को एटलांटिक सागर में बहते पाया। इससे इसका विश्वास दृढ़ हो गया कि नई दुनिया पश्चिमी किनारे पर अवश्य होगी और वहाँ मनुष्य रहते होंगे। अब इसने एटलांटिक पार करने की ठान ली।

सन् १४८२ ई० में इसने पुर्तगाल के राजा जॉन द्वितीय से, सहायता के लिए, आवेदन किया। पर इस राजा ने चालाकी से अपने आदमियों को खोज के लिए भेज दिया। ये लोग डरपोक थे, इससे बिना कुछ किये थोड़े ही दिनों में लौट गये। राजा से सहायता न पाकर, दुःखित हो, कोलम्बस

ने अपने भाई को इंग्लैंड के राजा हेनरी सप्तम के पास भेजा पर समुद्री डाकुओं ने उसका सब सामान लूट लिया। भू-चित्र भी नष्ट हो गये। भू-चित्र दुबारा बनवाने पड़े और राज के कार्य में विलम्ब होने लगा।

इसी अवसर पर कोलम्बस ने अपने देश से सहायता माँगी, किन्तु जिनोआवालों ने भी कुछ सहायता न की। तब निराश होकर उसने स्पेन की शरण ली। राजा फर्डिनेंड और रानी इसाबेला ने इस योजना पर विचार करने के लिए कुछ विद्वानों से कहा, पर इन विद्वानों की समझ में कोई बात न आई। अब तो कोलम्बस को कुछ भी आशा न रही। लोग उसकी हँसी करने लगे। बच्चे भी उसको चिढ़ाने लगे।

पर दुर्दिन टल गये और इसाबेला ने धन से सहायता करना स्वीकार किया। तीन जहाज मिले, लेकिन साथ जाने को कोई प्रस्तुत न हुआ। अन्त में घूस देने और धमकाने से १२० मनुष्य मिल गये। चलने की तैयारी हो गई। एक वर्ष के लिए पर्याप्त भोज्य पदार्थ ले लिये गये।

रानी ने परदेशी राजा के नाम चिट्ठी लिख दी और इस आशा से, कि कोलम्बस सब विधर्मियों को ईसाई बना सकेगा, उसे जाने की अनुमति दे दी। कोलम्बस से कहा गया कि यदि वह वस्तुत कोइ नया प्रदेश ढूँढ निकालेगा तो उसके धन में उसका भी दसवाँ भाग लगेगा और उसके वंशजों को भी यही धन मिलता रहेगा, वह जिन प्रदेशों को ढूँढ निकालेगा

उनको राजप्रतिनिधि बना दिया जायगा और जल-सेना का 'ऐडमिरल' (सेनापति) भी बना दिया जायगा। यदि वह किसी नये प्रदेश का पता न लगा पायगा तो उसे कुछ न मिलेगा।

कोलम्बस सान्ता मेरिया जहाज में बैठा और "पिन्ता" तथा 'निना" जहाज के साथ ३ अगस्त सन् १४९२ ई० में पालस के निकट माल्टस से रवाना हुआ। इसके साथी पहले से ही डरते थे, अब वे कनेरी द्वीप में टेनेरिफ ज्वाला-मुखी पर्वत को देखते ही घबरा उठे। ऐसे डरपोक साथियों को लेकर चलना भी अपूर्व साहस का कार्य था। कोलम्बस ने उनको हर तरह से समझाया। वह कभी तो उनसे कहता कि स्थल बहुत दूर नहीं है, कभी कहता कि अभी चले ही कितने मील हैं। कभी धन का आशा दिलाता, कभी उन्हें लज्जित करता कि वे कायर हैं और कार्य पूरा किये बिना ही लौट जाने से लोग उनकी हँसी करेंगे। इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर उन्होंने सरगैसा सागर देखा। यहाँ समुद्री घास दिखाई पड़ी और कुछ पक्षी भी दृष्टिगोचर हुए। इससे सबने सोचा कि भूमि बहुत दूर नहीं है। ये लोग रात दिन चलते ही गये, अन्त में बहुत दूर पर प्रकाश दिखाई पड़ा। फिर क्या था, जहाज में हलचल मच गई। किसी ने कहा कि यह प्रकाश किसी दूसरे जहाज का है, और किसी कहा कि यह प्रकाश स्थल पर है। अन्त में रात को दो बजे स्थल स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ा। सब लोग सवेरा होने की अपेक्षा में बैठे रहे।

२२ अक्तूबर १४९२ ई० को ये लोग सैन सैलेवडर द्वीप मे उतरे। यह द्वीप लगभग २३ मील लम्बा और ७ मील चौड़ा है। नाविक आनन्द से नाच उठे, उन्होने कालम्बस को छाती से लगा लिया। फिर ईश्वर का धन्यवाद देने के लिए सब घुटनों के बल बैठे। द्वीप में स्पेन का झण्डा गाड़ दिया गया। यहाँ के निवासी पहले तो बहुत डरे, परन्तु इनका अपूर्व रूप, वेष और अस्त्र शस्त्र देखकर उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। इनमे विपत्ति की आशङ्का न देखकर वे इनसे वस्तुओं का आदान प्रदान करने लगे।

कालम्बस ने इन मनुष्यों के बारे में अपने लड़के से यह कहा था—"ये लोग जब समुद्र के किनारे पर मिले, निरस्त्र थे। इनके साथ कोई स्त्री न थी। पुरुष प्राय ३० वर्ष के थे। इनका रङ्ग बादामी और कद मँझोला था। बाल काले और कानो के ऊपर तक कतरे हुए थे। कपाल चौड़ा था। इन्होंने शरीर रँग लिया था और वे अस्त्रों का प्रयोग करना न जानते थे। नगी तलवार को जब इन्होंने देखा तो बहुत आश्चर्यान्वित हुए और उसको उलटा, धार की ओर, पकड़ लिया। समुद्र-तट पर इनकी बहुत सी छोटी छोटी किश्तियाँ थी।" इन लोगो ने सुग्गे पकड़-पकड़कर कोलम्बस को दिये और धुनी हुई रुई भी दी। कोलम्बस ने भी इनको घंटी, काँच की माला और लाल टोपियाँ दी थीं। इनकी भाषा कोई नहीं समझ सकता था पर ये इशारे से बात करते थे।

ऐमेरिगो वेस्पूकी

जन्म-स्थान—फ्लोरेंस, मृत्यु-स्थान—सेविल

एमरिगो वस्पूकी का जन्म फ्लोरेंस नगर में, सन् १४५१ ई० म हुआ। ४६ वर्ष की अवस्था म कैस्टाइल के राजा की आज्ञा से यह भी कोलम्बस की तरह एटलांटिक सागर पार करने को चला। अभी तक कोलम्बस के दक्षिणी अमेरिका के खोज निकालने का हाल किसी को मालूम नहीं हुआ था। एमरिगो ने सन् १४९७ ई० म दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भाग का पता लगाया और यही इस देश का ढूँढ निकालनेवाला कहा गया। इसने किनारे किनारे उत्तर की ओर चलना चाहा और कुछ दिनों म गल्फ आफ मेक्सिको को पार करके उत्तरी अमेरिका का पता लगा लिया।

सन १४९९ ई० में इसे दूसरी बार कैस्टाइल के राजा ने भेजा। अब की बार यह ब्रेजील पहुँचा। इसने अब पुर्त्तगाल की नौकरी कर ली। सन् १५०१ ई० मे दक्षिणी अमेरिका के किनारे किनारे यह दक्षिण की ओर चला और हार्न अन्त रीप के प्राय निकट हो जा पहुँचा। इस खोज से ऐमरिगो की ख्याति बढ गई। दोनों महाद्वीप, जो पनामा नहर निकलने से पहले एक थे, इसी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उत्तरी,

मध्य और दक्षिणी अमेरिका एमेरिगो के नाम का ही अपभ्रंश है।

कुछ दिनों के पश्चात् यह स्पेन के जल-विभाग का प्रधान नाविक बना दिया गया और कोलम्बस का सच्चा मित्र हो गया। सन् १५१२ ई० में इसका देहान्त हुआ।



वास्को न्युनेज डी वल्बोवा

जन्म—सन् १४७५ ई०
मृत्यु—सन् १५१५ ई० के लगभग

साधारण मनुष्य अपने प्रयत्न से कैसे जगत् में प्रसिद्ध हो सकता है इसका उदाहरण न्युनेज डी वल्बोवा है। यह घर से निकाला हुआ बहुत ही दरिद्र पुरुष था। स्पेन के जरिस नगर में इसका घर था। इसने बहुत सा ऋण भी लिया था और यह महाजनों से पीछा छुड़ाना चाहता था, इसलिए जब हिस्पेनिओला से कुछ स्पेन निवासी, कोलम्बस की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात्, जहाज पर जा रहे थे तब यह जहाज के मालगोदाम में छिप गया। जहाज छूटने पर कप्तान को ज्ञात हुआ कि वल्बोवा छिपकर भाग रहा है। इससे वह बहुत ही क्रुद्ध हुआ। उसने वल्बोवा को किसी द्वीप में उतार देना चाहा। परन्तु जहाज के मल्लाहों के अनुरोध से उसने उसे डेरियन में, जो अब पनामा के नाम से विख्यात है, उतार दिया।

यहाँ स्पेन निवासी आपस में लड़ रहे थे। जाते ही इन पर प्रभाव जमाकर यह इनका सर्दार हो गया। यहाँ के मूल-निवासी भी इसका सम्मान करने लगे और शान्ति स्थापित

हो गई। इसने यहाँ के एक देशी राजा करिटा की लड़की से ब्याह कर लिया। अब लोग इसको दक्षिण के रत्नमय देश की कहानियाँ सुनाने लगे और इसने भी देश के पश्चिमी किनारे के प्रशान्त महासागर का नाम सुना। एक और देशी राजा कोमोगर बल्बोवा का मित्र हो गया था। इसी ने प्रथम बार बल्बोवा से प्रशान्त महासागर की चर्चा की थी। २ सितम्बर सन् १५१३ ई० में इसी बात की परीक्षा के लिए यह एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने लगा। २५ सितम्बर सन् १५१३ ई० में इसने पश्चिम में वैसा ही एक सागर देखा जैसा स्पेन से यहाँ आते समय देखा था। मार्को पोलो का नाम तुम्हें स्मरण होगा। उसने इस महासागर का एशियाई किनारा देखा था और बल्बोवा ने उसका पूर्वी किनारा देख लिया। अभी तक तो लोगों को अमरिका के पूर्वी किनारे का और प्रशान्त महासागर का ही ज्ञान था, अब इनको इस महाद्वीप के पश्चिमी किनारे का और प्रशान्त महासागर का भी ज्ञान हो गया। पर इतने ज्ञान से लोग कब सन्तुष्ट रह सकते थे।

बल्बोवा की इस खोज ने स्पेन में हलचल मचा दी और जब इसने जहाज बनाने के लिए स्पेन-सरकार से कुछ सामान माँगा, तो उसने तुरन्त सब सामान भेज दिया और कुछ सामान किनारे के वेस्ट इंडीज द्वीपपुञ्ज से भी आया। उसको इसने बड़ी सावधानी से जानवरों और मनुष्यों पर लादकर पश्चिमी तट पर पहुँचाया और वहाँ जहाज बनाया

जाने लगा। जहाज बन ही चुका था कि इसके शत्रु पेड्रारियस ने, जो स्पेन-सरकार की ओर से यहाँ 'गवर्नर' था, डाह के मारे इसकी हत्या करा दी।

यह सच है कि बल्बोवा अपना कार्य पूरा न कर सका परन्तु इसने औरों के लिए खोज का कार्य तो सुगम कर दिया।



सिबेस्टियन कैबट

जन्म—सन् १४७७ ई०, मृत्यु सन् १५५७ ई०

सिबेस्टियन कैबट का जन्म ब्रिस्टल नगर में हुआ था। यह जॉन कैबट का दूसरा बेटा था।

जॉन कैबट जिनेवा का रहनेवाला था और वाणिज्य के लिए ब्रिस्टल में आया था। इसने लेवेंट में व्यवसाय करते समय, एशिया के धन के विषय में, बहुत कुछ सुना था। यह ऐसे राजा की खोज में था जो इसके उद्देश्य को पूरा करने में सहायता करे। हम जिस समय की बात कहते हैं उस समय इँगलैंड का राजा हेनरी सप्तम था। तुम्हें स्मरण होगा कि इस राजा ने कोलम्बस को सहायता नहीं दी थी और जब उसके नये नये देशों के पता लगाने का हाल सुना तो वह अपने व्यवहार पर बहुत लज्जित और दुःखित हुआ था। अब यह चाहता था कि किसी मनुष्य को आविष्कार के लिए भेजे। जब जॉन कैबट ने राजा से अपनी इच्छा प्रकट की तो उसने तुरन्त इसको इस कार्य के लिए अनुमति-पत्र दिया और उसमें स्पष्ट लिख दिया कि खोज इँगलैंड के नाम पर की जाय और पता लगाये हुए देश से जो लाभ होगा वह जॉन कैबट और उसकी सन्तान को प्राप्त होगा, —

पाचवाँ हिस्सा राजा को मिलेगा। ऐसा अनुमति-पत्र पाकर जॉन कैबट अपने बेटे सिवस्टियन कैबट के साथ सन् १४९७ ई० में आयरलैंड के दक्षिण होता हुआ उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़ा। वह जानता था कि पृथ्वी गोल है इसलिए पश्चिम की राह से एशिया भी पहुँच सकते हैं। दक्षिण जाने की अनुमति न था, क्योंकि हेनरी सप्तम स्पेन से झगड़ा मोल लेना न चाहता था। पूर्वी राह मार्को पोलो ने देखी ही थी और उसमें कठिनाइयाँ भी बहुत थीं। इस कारण कैबट ने पश्चिमी राह का ही पता लगाना चाहा।

इसका जहाज छोटा था और साथ में केवल १८ मनुष्य थे। ये लोग सेंट लारेंस नदी के मुहाने पर पहुँच गये, परन्तु इतने थोड़े मनुष्यों के साथ एक अनजान देश में उतरना निरापद न समझकर ये लोग ब्रिस्टल लौट आये। तीन महीने में लौटने पर जब इन लोगों ने अपनी खोज का वर्णन किया तो हेनरी सप्तम बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने कैबट को बहुत सा पारितोषिक दिया। फिर दूसरी बार इसको भेजने की तैयारी की। अब की बार कुछ अँगरेजी जहाज माल लादकर भेजे गये और बहुत से अँगरेज भी साथ हो लिये। ये लोग मई सन् १४९८ ई० में ब्रिस्टल से दुबारा रवाना हुए और जहाज लेकर उत्तरी अमेरिका के किनारे पहुँचे। परन्तु ये लोग ज्यों ज्यों दक्षिण की ओर बढ़ते गये, इन्हें इस देश का अन्त ही न मिला। इसको

पार करने की आशा घटती गई। बहुत दक्षिण में जाना मना था, इस कारण ये लोग लौट पडे। इधर एशिया जाने का पश्चिमी राह भी इनको न मिली। अब तो हेनरी सप्तम बहुत असन्तुष्ट हुआ। फिर उसने तीसरी बार यात्रा करने में सहायता न की।

सन् १४९९ ई० में सिबेस्टियन कैवट ने अपने पिता के कार्य को पूरा करना चाहा पर वह कृतकार्य्य न हो सका। केवल न्यू फाउंड लैंड का पता चला।

वह लिखता है कि यहाँ समुद्र मछलियों से भरा हुआ है, और ज्यों ज्यों उत्तर की ओर चलिए समुद्र में जहाज से भी बडे बडे बर्फ के सफेद ढोके तैरते देख पडते हैं।

सिबेस्टियन कैवट, पिता के साथ, सेंट लारस के दक्षिण का यात्रा कर चुका था। इसलिए अब की बार वह उत्तर की ओर गया। पर यहाँ सदा अधिक होने के कारण इसके साथी आगे चलना नहीं चाहते थे इसलिए विवश होकर ये लोग दक्षिण की ही ओर चलकर फ्लोरिडा तक पहुँचे और एशिया के मार्ग का पता लगाने लगे। परन्तु फिर भी इनको एशिया की राह न मिली।

जब हेनरी अष्टम गद्दी पर बैठा, कैवट एक बार फिर एशिया की राह की खोज में चला और ब्रेजील तक पहुँचकर हिस्पैनिओला और पोर्टो रिको होता हुआ घर लौट ।

सन् १५१६ ई० में इसने स्पेन की नौकरी कर ली, परन्तु आविष्कार का काम फिर भी पूरा न हुआ। सन् १५१७ ई० में यह फिर अँगरेजों की ओर से लैब्रेडर गया और वहाँ से हडसन की खाड़ी में पहुँचा, परन्तु एशिया की राह फिर भी न मिला। इससे निरुत्साह होकर, स्पेन की नौकरी करके, यह ब्राज़ील की तट भूमि को स्पेन के अधिकार में लाने की चेष्टा करता रहा। सन् १५४८ ई० में यह इँगलैंड लौट आया। राजा एडवर्ड षष्ठ ने इसकी बातों से प्रसन्न होकर इसे १६६ पौंड १३ शिलिंग ४ पेंस की पेंशन दे दी और इँगलैंड का चीफ़ पाइलट भी नियुक्त कर दिया।

एक नई कम्पनी मर्चंट एडवेंचरर्स के नाम से चल पड़ी। सिबेस्टियन कैबट उसका नायक बना। सन् १५५२ ई० में उत्तर की ओर कुछ जहाजों के साथ सिबेस्टियन चला। अब एशिया से व्यापार आरम्भ हो गया।

सन् १५५७ ई० में सिबेस्टियन कैबट का देहान्त हो गया। यद्यपि न तो इसे और न इसके पिता को ही एशिया के पश्चिमी समुद्री मार्ग का पता चला, तो भी इनकी अधूरी खोजों ने दूसरों के लिये मार्ग सुगम कर दिया। इतना ही नहीं, इँगलैंड को नई दुनिया के पूर्वी किनारे पर अधिकार जमाने का प्रथम अवसर भी इन्हीं लोगों ने दिया था।

फर्नेंडो डी मैगलहैस या मैगिलन

जन्म—सन् १४७० ई० के लगभग,
मृत्यु—सन् १५२१ ई०

मैगिलन का जन्म पुर्तगाल में हुआ। यह अच्छे कुल में जन्मा था और थोडी ही अवस्था में रानी का नौकर हो गया। बडे होने पर इसने राजा इमैनुयेल की नौकरी कर ली। वास्को डि गामा के पश्चात् पुर्तगालवाले एशिया की ओर कई बार भेजे गये और मैगिलन ने भी इनके साथ हो लेना चाहा।

सन् १५०४ ई० में एल्मिदा ने, जो नये ढूँढे गये देशों का वाइसराय होनेवाला था, मैगिलन को साथ ले लिया और केप आफ गुड होप की राह वह एशिया की ओर चल पडा। सन् १५०९ ई० में यह भारत को छूता और छोडता हुआ सुमात्रा और मलका पहुँचा। फिर वहाँ से भारतवर्ष आया। यहाँ वह अल्बुकर्क की नौकरी करने लगा। सन् १५११ ई० में यह एक जहाज में कप्तान बनाकर मलका भेजा गया और वहाँ से सन् १५१२ ई० में पुर्तगाल लौट गया। वहाँ राजा से कुछ बातों में इसकी अनबन हो गई और इसने घर छोडकर बाहर जाना चाहा। उद्देश्य यह भी था कि ऐटलांटिक को पार करके मलका, जिसको स्पाइस आइलैंड भी कहते हैं,

पहुँचे और वहाँ से सामान लाकर राजा को सन्तुष्ट करे। पर वह राजा से लड़ चुका था और जब इसने अपनी इच्छा प्रकट की तब राजा ने सहायता करना स्वीकार न किया। इस पर यह स्पेन के राजा चार्ल्स पञ्चम के पास गया। उसने पाँच जहाज २३६ मनुष्य और दो वर्ष के उपयुक्त खाद्य पदार्थ का स्वीकार किया। मैगिलन को यह बता दिया गया कि पुर्तगाल सरकार की ओर से पता लगाई हुई भूमि पर वह अधिकार न जमाये। हाँ, प्राप्त हुए अंश के नामक भाग का वह अधिकारी होगा। मैगिलन ने कोलम्बस के आविष्कार का हाल सुना था। बल्बोवा के पैसिफिक महासागर के विषय की बातें भी उसके हृदय में बैठी हुई थीं। उसने पैसिफिक को पार करने का निश्चय कर लिया। वह २० सितम्बर सन् १५१९ ई० में स्पेन से रवाना हुआ। उसके साथ भिन्न भिन्न देशों के लोग थे। कुछ ऐसे भी थे जो उसके कार्य में विघ्न डालना चाहते थे। मैगिलन पुर्तगाल की ढूँढ निकाली हुई भूमि में नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसने टेनेरिफ द्वीप से पहुँचकर दक्षिण पश्चिम की राह ली। बहुतेरी विपत्तियों को अतिक्रमण कर वह परनैमबुको के निकट पहुँचा और वहाँ से दक्षिणी अमेरिका के किनारे किनारे दक्षिण-पश्चिम चलते चलते रायो डी लाप्लेटा में सन् १५२० ई० में गया। वहाँ से वह फिर दक्षिण की ओर चला। इधर दो जहाजों के कप्तानों ने, जो पहले से ही विद्रोह के लिए प्रस्तुत थे, तीसरे

जहाज के कप्तान का भी अपना साथ देने के लिए घेर लिया। इसका पता लगते ही मैंगिलन ने मुख्य विद्रोही सरदार का मरवा डाला। इससे सनसना छा गई। दो महीने तक य लोग सेंट जूलियन मे रुके य कि इनका पैटेगोनिया के निवासी दिखाई पडे। उनसे कुछ खाने का सामान मिलने की आशा इन लोगों को न रह गई थी कि एक बड़ा दैत्याकार मनुष्य दिखाई पडा। इसको मैंगिलन ने अपने साथ ले लिया और दो उद्दण्ड विद्रोहियो का कुछ खाद्य पदार्थ के साथ वहाँ उतार दिया। इससे जहाज म शान्ति हो गई। पूरे एक महीने के पश्चात्, २१ अक्तूबर सन् १५१६ ईस्वी को, मैंगिलन ने उस जल-विभाजक का पता लगाया जिससे वह पेसिफिक महासागर पहुँच सकता था। इस जल विभाजक का नाम, इसी के नाम पर, स्ट्रेट आफ मैंगिलन पडा। इस जल-मार्ग के दक्षिण में उसने एक अग्निशिखामय द्वीप देखा और इसी लिए इस द्वीप का नाम टियरा डेल फ्युगो रक्खा। टियरा डेल फ्युगो का अर्थ अग्निमय भूमि है। इसी मार्ग के उत्तरी किनारे की भूमि को उसने रमणीय बताया है, क्योंकि ऊँचे पर्वतों से बर्फ की नदी बहती हुई समुद्र म गिरती है।

सात दिन की कठिन यात्रा के पश्चात् २८ अक्तूबर सन् १५१६ ई० को वह पैसिफिक के तट पर पहुँचा। इधर इस मार्ग को पार करते समय एक जहाज डूब गया था और एक जहाज के नाविक साथ छोडकर घर चले गये थे। अब केवल

उसको कुछ देशी मनुष्य मिले। इन्होंने स्पेनवालों की आव भगत की। ये लोग मक्सिको के राजा मोंटेज़ुमा के दूत थे और इस बात का पता लगाने आये थे कि स्पेनवाले क्या चाहते हैं। इन लोगों के साथ कोर्टिस ने अपने देश की वस्तुओं का [illegible] किया और इनसे राजा से मिलना चाहा। [illegible] अनुमति लेने के लिए राजदूत राजा के निकट लौट गये। [illegible] मोंटेज़ुमा डरपोक था। इन विदेशियों की बन्दूक [illegible] का हाल सुनते ही वह घबरा गया। उसने कोर्टिस के निकट सोने और चाँदी की भेंट भेजा और अपने [illegible] को कह सिखा दिया कि इन विदेशियों को इस देश की दुर्गमता की कहानी सुनाकर डरवा दे। पर इस भेंट को देखने से कोर्टिस को लालच बढ़ गया। उसने राजधानी मक्सिको में पहुँचने की ठान ली। इससे इसके साथी डर गये। उनको समझा बुझाकर यह उत्तर की ओर चल पड़ा। अब इसने वराक्रूज़ में डेरा डाला। यहाँ इसके पास क्यूबा से कुछ और लोग आ गये। लगभग १५० मनुष्यों को यहाँ छोड़कर यह ३५० स्पेनवालों और लगभग ६००० देशी सिपाहियों के साथ मेक्सिको विजय करने को चला। तुमने बंगाल विजय और आर्कट की कहानी सुनी है। थोड़े से अँगरेज़ सिपाहियों के साथ क्लाइव ने किस प्रकार हिन्दुस्तानी सिपाहियों को लड़ाई की शिक्षा दी और उन्हें अपने कार्य के उपयुक्त बनाया। कोर्टिस ने भी इसी प्रकार देशी

सिपाहियो को युद्ध-विद्या सिखा दी। ये लोग अपने राजा क अत्याचारो से ऊबे हुए थे, इससे इन्होने कोर्टिस को लडाई मे सहायता दी। ऐसी सेना के साथ कोर्टिस मेक्सिको की ओर बढा। वह रास्ते मे लोगो से सोना-चाँदी लेने लगा। जो लोग न देते थे उनसे लडता था और उनका पराजित कर उनका सर्वस्व छीन लेता था। यह समाचार जब मोंटेजुमा के पास पहुँचता तब वह घबराकर अधिक सोना-चादी भेजता और कोर्टिस से कहला भेजता कि आगे न बढो। लेकिन उसका कौन सुनता था? कार्टिस विजयोन्माद स पागल हो रहा था। उसने इनक धर्म पर भी हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। वह ज्यो ज्यो आगे बढता त्यो त्यो देश ऊँचा प्रतीत होता जाता था और देश का प्राकृतिक सौन्दर्य भी बढता जाता था। मोंटेजुमा का दुर्भाग्य था कि इसी समय ज्वालामुखी पोपोकैटेपेट्ल का उद्गार हुआ। राजा इसको ईश्वर का अभिशाप समझने लगा। इधर कोर्टिस अपन सिपाहियो क साथ सुन्दर मेक्सिको नगर मे जा पहुँचा। राजा मोंटेजुमा दैव दुर्विपाक से घबराया हुआ तो था ही, कोर्टिस के आने क सवाद ने उसको और भी विकल कर दिया। विदेशियो को प्रसन्न करने के लिए आगे बढकर उसने उनका स्वागत किया। राज-कोष मे जितना धन था, सब लाकर उसने कोर्टिस के पैरो पर रख दिया। पर कोर्टिस ने धूर्तता से मोंटेजुमा को बन्दी कर लिया और यह कहला भेजा कि अब मेक्सिको पर स्पेन के राजा का अधिकार है।

कार्टिस इससे भी सन्तुष्ट न हुआ। उसने राजा से ईसाई बनने को कहा। पर राजा अपने धर्म्म का पक्का था। उसने अपना धर्म न छोड़ा। इस पर क्रुद्ध होकर कोर्टिस ने देश के देव-मन्दिरों और मूर्त्तियों को तुड़वा दिया। ऐसे कर्म का फल कब अच्छा होता है? उसके देशी सिपाही बिगड़ खड़े हुए। उधर स्पेन के सिपाहियों का एक दल, जो कोर्टिस के विपक्ष में था, किनारे पर आ उतरा। अब दोनों ओर सँभालना कार्टिस के लिए कठिन हुआ। यह झगड़ा दस वर्ष तक होता रहा। अन्त में कार्टिस कृतकार्य हुआ। सोने-चाँदी से लोगों के थैले भर गये, लेकिन कोर्टिस का लोभ बढ़ता ही गया। कैलिफोर्निया का पता लगाने के लिए उसने मेक्सिको से स्पेननिवासियों का एक जत्था भेजा और आप भी इसकी खोज में लगा रहा। सन् १५४७ ई० में इसका देहान्त हो गया।

फ्रैंसिस्को पिजारो

जन्म—सन् १४७० ई०, मृत्यु—सन् १५४१ ई०

फ्रैंसिस्को पिजारो का जन्म स्पेन के ट्रुक्सिलो नगर में हुआ था। सूअरों की रखवाली करना इसका पेशा था। [illegible] इसे नये देशों के धन से मालामाल होने की इच्छा [illegible] थी। इसके लिए इसने नलेंबोवा का साथ [illegible] कुछ दिनों तक पनामा में कृषक का कार्य करता [illegible] इसने दक्षिणी देशों के धन के बारे में बड़ा [illegible] सुनीं। अवसर प्राप्त होने पर यह इन देशों [illegible] चाहता था। गवर्नर के कार्य से इसने [illegible] लिया था। सन् १५२४ ई० में एक [illegible] मनुष्यों के साथ यह रवाना हुआ। [illegible] कष्ट मिला, खाने-पीने के सामान [illegible]। [illegible] में विवश होकर पिजारो ने [illegible] के लिए पनामा में लौटा दिया [illegible] किनारे पर उतर पड़ा।

वहाँ जङ्गल ही जङ्गल था। [illegible] थे। [illegible] बहुत [illegible] में [illegible] डा। [illegible] में [illegible]

के उस देश का पता लगा जहाँ पर्याप्त सोना था। ये लोग बड़ी कठिनाई के साथ समुद्र तक रास्ता पा सके। जब ये वहाँ पहुँचे तो इन्होंने अपने जहाज़ को माल से लदा हुआ पाया। यह जहाज पनामा से माल ले आया था। इसी जहाज पर बैठकर ये लोग दक्षिण की ओर चले। कुछ दिनों के बाद इन्होंने एक बड़ी बस्ती देखी। जब ये जहाज से उतरकर बस्ती की ओर चले तो गाँववाले डरकर भाग गये। कुछ देर बाद लौटकर इन पर इन्होंने आक्रमण कर दिया। मारे डर के ये लोग अपने जहाज पर लौट आये।

जहाज भी टूट रहा था इसलिए आगे बढ़ना उचित न समझकर ये लोग पनामा लौट गये। जहाज की मरम्मत हो जाने पर दो और जहाज लेकर, १६० मनुष्यों के साथ, पिजारो फिर रवाना हुआ। अब की बार वह जहाज में कुछ घोड़े भी लाया था। जब उस स्थान को पार कर लिया जहाँ ये लोग पहली बार पहुँचे थे, तो पिजारो जहाज से उतर गया और उसने जितना सोना लूटा था वह सब जहाज पर लादकर इस आशा से पनामा भेज दिया कि और लोग धन के लोभ से आ मिलेंगे। दूसरे जहाज दक्षिण की ओर बढ़े और गैलो द्वीप को पार कर गये। यहाँ के निवासी शिक्षित प्रतीत हुए, क्योंकि ये लोग किश्ती पर पाल चढ़ाये घूम रहे थे। पाल के चित्र और कारीगरी को देखकर किसी को यह भ्रम नहीं हो सकता था कि ये लोग अशिक्षित हैं।

जहाज के कप्तान ने इनमें से कुछ लोगों को पकड़ लिया। वह इनको अपनी भाषा सिखाने लगा। कुछ दूर और चलकर वह पिजारो के निकट लौट आया। इधर खाद्य पदार्थों की फिर कमी हुई। पनामा को फिर एक जहाज भेजा गया। पिजारो ने अब गैलो जाने का विचार किया, पर उसके साथी तैयार न हुए और बलवा होने को ही था कि पिजारो ने सबको समझा बुझाकर साथ चलने को तैयार कर लिया। केवल थोड़े से मनुष्य लौट गये।

कई महीने बाद एक जहाज पनामा से माल लादकर ले आया। अब की बार फिर ये लोग दक्षिण की ओर बढ़े और गुयाकिल बन्दरगाह में पहुँचे। कार्डिलरा पर्वत की सुजला सुफला पश्चिमीय तट-भूमि को देखकर ये लोग बहुत ही आनन्दित हुए। यहाँवालों ने इन लोगों को फल, अनाज, लामा* और ऊँट देकर सन्तुष्ट किया। ये लोग कुछ और दक्षिण चलकर पनामा लौट गये। पिजारो अब स्पेन गया और वहाँ से राजा की अनुमति लेकर पनामा वापस आया। सन् १५३१ ई० में तीसरी बार १८० मनुष्य, कुछ घोड़े और तीन जहाज लेकर यह पेरू की ओर चला। विषुवत रेखा के पास आते ही यह घोड़ों और आदमियों के साथ उतर पड़ा। उसने जहाजों को दक्षिण की ओर रवाना कर दिया।

---

* दक्षिणी अमरिका का—ऊँट की जाति का—एक पशु, जिस पर व्यवसायी लोग माल लादते हैं।

जब पिजारो मय जहाज़ के गुयाकिल तक पहुँचा तब सब ने देश के अन्दर जाने का विचार किया। सन् १५३२ ई० में तट से कुछ दूर पर डेरा डाला गया। कुछ लोगों को छोड़कर पिज़ारो अन्दर की ओर चला। यहाँ इसने इन्का राजा अता हुआल्पा का नाम सुना था। इस राजा का राज्य आजकल पेरू के नाम से प्रसिद्ध है। यह बड़ा ही धनी राज्य था। पिजारो ने इसको लेना चाहा। राजधानी कैक्सामरका एंडीज पर्वत के दूसरी तरफ थी। पठार और पर्वत के पार करने पर ही कोई वहाँ पहुँच सकता था।

पिजारो के साथी पहले पहल घबराये, पर धन के लोभ से आगे बढ़े। इन्का ने इनको सोने-चाँदी और ऊनी कपड़ों की भेंट दी, पर ये लोग आगे ही बढ़ते गये और कैक्सामल्का राजधानी दिखाई पड़ी। संवाद पाकर इन्का स्वयं मिलने आया पर स्पेनवाले उस पर टूट पड़े। वह बन्दी कर लिया गया। पिजारो ने अब इससे नगर का सब धन इकट्ठा करवाया, फिर इसको मरवा डाला।

सन् १५३४ ई० में कुज्को नगर भी स्पेनवालों के हाथ आया और धीरे धीरे पेरू और चिली इन्हीं लोगों के हो गये।

अता हुआल्पा की मृत्यु के पश्चात् नये इन्का ने बदला लेने की ठाना। पर स्पेन के सिपाही शिक्षित थे और संख्या में भी अधिक थे, इसलिए बड़े घमासान युद्ध के पश्चात् इन्का भाग गया। उसका एक सिपाही भी प्राण लेकर न भाग सका।

स्पेनवालों ने देश को लूट लिया। कहा जाता है कि लूट के माल में दस या बारह, मनुष्य के कद की, सुवर्ण-मूर्तियाँ थीं। लूट के माल के ४८० हिस्से किये गये। हर सिपाही के हिस्से में २५००० हजार रुपये आये।

पिजारो का भाई फर्नेंडो पिजारो भी बड़ा निर्दय था। इस लूट के कार्य में उसी ने अधिक हिस्सा लिया था।

ऐसी निर्दयता का फल कब अच्छा होता है ? सन् १५४१ ई० में इसी के आदमियों ने इसको, ७० वर्ष की अवस्था में, मार डाला।



सर ह्यूग विलोबी

मृत्यु—सन् १५५४ ई०

बालको! तुम्हें मार्को पोलो का किस्सा याद होगा, कुबल-खाँ के [illegible] देश का पता लगाने के लिए उसने कैसे कैसे कष्ट उठाये थे और फिर प्रिंस हेनरी ने जलमार्ग से [illegible] चीन पहुँचने के लिए कैसे कैसे नाविकों को खोज के कार्य के लिए भेजा था, अन्त में कैसे वास्को डि गामा उत्त-माशा अन्तरीप होते हुए भारत में पहुँचा था। पर उत्तर-पूर्व की समुद्री राह से चीन पहुँचने का किसी ने विचार नहीं किया था। हाँ, कैबट ने अवश्य इस राह के बारे में अँगरेजों को सुझाया था। यदि खोज के कार्य के लिए लोग बाहर न निकलते तो योरोप के जिस नक़शे को अब तुम अपने सामने देखते हो वह सम्भवतः ठीक ठाक न बना होता, विशेषतः उत्तरी सरहद का ठीक पता लगना तो असम्भव सा था।

तुमने मर्चेंट एडवेंचर्स कम्पनी का नाम किसी पिछले पाठ में सुना है। इसी कम्पनी के अगुवा बनकर सर ह्यूग विलोबी और कप्तान रिचर्ड चैंसलर सन् १५५३ ई० में उत्तर-पूर्व की राह ढूँढने के लिए निकले। चलते समय इनको इँगलिस्तान के राजा एडवर्ड षष्ठ ने कैथ या चीन के राजा से मिलने के

लिए चिट्ठी दी और यह कह दिया कि किसी राजा से या उसकी प्रजा से न तो छेड़छाड़ करना और न किसी के राज्य में, बिना उसकी अनुमति के, उतरना। उसने विदेशी राजाओं से भी कहला भेजा कि यदि ये अंगरेज नाविक सङ्कट में पड़ें तो इन पर मनुष्योचित दया दिखाइएगा।

स्काटलैंड के उत्तर में शटलैंड द्वीप है। यहाँ इन नाविकों ने रुकना चाहा, पर आँधी चलने के कारण ये वहाँ रुक न सके और लोफोटेन में पहुँचे। इनको रास्ता नहीं मिल रहा था लेकिन भाग्य से नार्वे का एक मल्लाह छोटी सी किश्ती खेता हुआ दिखाई पड़ा। उसने इन लोगों को नार्वे के किनारे पर आने के लिए कहा। ये लोग तैयार हो गये और किनारे के फिओर्ड्स के पास पहुँचे। इन फिओर्ड्स की चट्टानें बहुत ऊँची और खड़ी दिखाई पड़ी। नदियाँ, जो समुद्र में गिर रही थीं, बहुत ही सुन्दर मालूम होती थीं। पहाड़ों पर चीड़ के पेड़ खड़े थे और मल्लाहों की किश्तियाँ मछली मारने के लिए किनारे पर तैयार खड़ी थीं। इनमें से एक अच्छे मल्लाह को, रास्ता दिखाने के लिए, विलौबी ने साथ ले लिया।

ये ज्यों ज्यों उत्तर की ओर बढ़ते थे त्यों त्यों दिन छोटा होता जाता था और जब ये हैमरफेस्ट के निकट पहुँचे तो सूर्य केवल घंटे दो घंटे के लिए दिखाई पड़ा। इसको 'मिड नाइट सन' कहते हैं। यहाँ रात्रि के समय मल्लाह लोग

किश्तियों में बैठकर मछली पकड़ने के लिए निकलते हैं और घंटे देर बाद उत्तर में जब मछलियाँ निकलती हैं तब उनको पकड़ लेते हैं।

यहाँ इसी समय दुर्भाग्य-वश, बड़े वेग से आँधी चली और विलोबी का जहाज़ किनारे से बहुत दूर हो गया और उसका साथी चैंसलर न मालूम अपने जहाज़ के साथ किधर चला गया। विलोबी ने अब नार्वे का उत्तरी हिस्सा पार कर लिया और वह नोवाजेम्ला द्वीप पर जा रुका। फिर वहाँ से [illegible] का भाग [illegible] और सफेद समुद्र को पार कर लैपलैंड के किनारे आया। अब जाड़े के दिन आये और इतनी कड़ी सर्दी पड़ी कि इसके साथी ठिठुरकर मरने लगे। समुद्र का पानी जम जाने से जहाज़ भी आगे नहीं बढ़ सकता था। सन् १५५४ ई० के लगभग विलोबी के प्राण इसी जगह पर छूटे।

इधर विलोबी को न पाकर चैंसलर अपने साथियों समेत लैपलैंड में वारदो पहुँचा। यहाँ इनको एक अद्भुत बात दिखाई पड़ी। क्या तुमने कभी ऐसा सुना है कि किसी देश में कुछ दिनों तक रात्रि ही न होती हो और आकाश में सूर्य सर्वदा चमकता रहता हो? यह ऐसा ही स्थान था।

इस स्थान पर मिलने का निश्चय विलोबी और चैंसलर ने पहले ही कर लिया था, पर कुछ दिनों की प्रतीक्षा के बाद जब चैंसलर ने विलोबी को आते न देखा तब वह आगे

था। सर्दी का मौसम निकट था। रुकना निरापद न समझकर लोगों की भयोत्पादक बातों की परवा न करके यह सफेद समुद्र में आ पहुँचा। यहाँ कुछ मल्लाह दिखाई पड़े। ये इनसे भयभीत थे कि अपनी किश्तियों के साथ किनारे पर भाग आये। अँगरेजों ने इनको बहुत समझाया और ढाढ़स बँधाया। थोड़े समय के पश्चात् इन पर उनका इतना विश्वास हो गया कि वे इन विदेशियों के पैर चूमने को दौड़े और इधर-उधर से इनके लिए बहुत सा खाना ले आये, पर वे किसी तरह अँगरेजों का माल लेने को तैयार न हुए। राजा की अनुमति के बिना दूसरों का माल लेना दण्डनीय था। उन्होंने इन लोगों से अपने राजा के साथ मिलने का आग्रह किया। मास्को नगर इस देश की राजधानी थी। यह नगर समुद्र-तट से दूर था। ये बिना पहियों की गाड़ियों पर बैठकर राजधानी की ओर चले। ऐसी गाड़ियों को स्लेज कहते हैं। इस भू-भाग पर जब बर्फ बहुतायत से पड़ती है तब इन गाड़ियों को बारहसिंघे खींचते हैं।

ऐसी ही गाड़ियों में बैठकर कुछ दिनों में चैंसलर, अपने साथियों समेत, मास्को के राजा के पास पहुँचा। राजा ने इन लोगों की बड़ी आवभगत की और चैंसलर के आगमन तथा कुछ व्यापार के विषय में भी अँगरेज राजा के पास पत्र भेजा।

दूसरी बार सन् १५५५ ई० में चैंसलर मध्य रूस की ओर चला। रूस से चीन के रास्ते का भी पता लगाने

किश्तियों में बैठकर मछली पकड़ने के लिए निकलते हैं और घंटे दो घंटे के उजाले में जब मछलियां निकलती हैं तब उनको पकड़ लेते हैं।

यहां इसी समय दुर्भाग्य वश, इतने वेग से आँधी चली कि विलोबी का जहाज किनारे से बहुत दूर हो गया और उसका साथी चैंसलर न मालूम अपने जहाज के साथ किधर चला गया। विलोबी ने अब नार्वे का उत्तरी हिस्सा पार कर लिया और वह नोवाजेम्ला द्वीप पर जा रुका। फिर वहाँ से पश्चिम को ओर लौटा और सफेद समुद्र को पार कर लैपलैंड के किनारे आया। अब जाड़े के दिन आये और इतना कड़ा सर्दी पड़ा कि इसके साथी ठिठुरकर मरने लगे। समुद्र का पानी जम जाने से जहाज भी आगे नहीं बढ़ सकता था। सन् १५५४ ई० के लगभग विलोबी के प्राण उसी जहाज पर छूटे।

इधर विलोबी को न पाकर चैंसलर अपने साथियों समेत लैपलैंड में वारडो पहुँचा। यहाँ उनको एक अद्भुत बात दिखाई पड़ी। क्या तुमने कभी ऐसा सुना है कि किसी देश में कुछ दिनों तक रात्रि ही न होती हो और आकाश में सूर्य सर्वदा चमकते रहते हों? यह ऐसा ही स्थान था।

इस स्थान पर मिलने का निश्चय विलोबी और चैंसलर ने पहले ही कर लिया था, पर कुछ दिनों की प्रतीक्षा के बाद जब चैंसलर ने विलोबी को आते न देखा तब वह आगे

पड़ा। सर्दी का मौसम निकट था। रुकना निरापद न समझकर लोगों का भयोत्पादक बातों की परवा न करके, यह सफेद समुद्र में आ पहुँचा। यहाँ कुछ मल्लाह दिखाई पड़े। ये इतने भयभीत थे कि अपनी किश्तियों के साथ किनारे पर भाग आये। अँगरेजों ने इनको बहुत समझाया और ढाढ़स बँधाया। थोड़े समय के पश्चात् इन पर उनका इतना विश्वास हो गया कि ये इन विदेशियों के पैर चूमने को दौड़े और इधर-उधर से इनके लिए बहुत सा खाना ले आये, पर ये किसी तरह अँगरेजों का माल लेने को तैयार न हुए। राजा की अनुमति के बिना दूसरों का माल लेना दण्डनीय था। उन्होंने इन लोगों से अपने राजा के साथ मिलने का आग्रह किया। मास्को नगर इस देश की राजधानी थी। यह नगर समुद्र-तट से दूर था। ये बिना पहियों की गाड़ियों पर बैठकर राजधानी की ओर चले। ऐसी गाड़ियों को स्लेज कहते हैं। इस भू-भाग पर जब बर्फ बहुतायत से पड़ती है तब इन गाड़ियों को बारहसिंघे खींचते हैं।

ऐसी ही गाड़ियों में बैठकर कुछ दिनों में चैंसलर, अपने साथियों समेत, मास्को के राजा के पास पहुँचा। राजा ने इन लोगों की बड़ी आवभगत की और चैंसलर के आगमन तथा कुछ व्यापार के विषय में भी अँगरेज राजा के पास पत्र भेजा।

दूसरी बार सन् १५५५ ई० में चैंसलर म॰ ओर चला। रूस चीन के रास्ते का

की अनुमति इसको मिल चुकी थी। चेंसलर अबकी बार रूस में ही रह गया। उसने अपने साथियों को वापस भेज दिया।

सन् १५५६ ई० में तीसरी बार अंगरेजों का एक दल चला। इन लोगों को लैपलैंड के निकट विलोबी के जहाज का अस्थिपंजर मिला।

इधर चेंसलर, मास्को के एक राजदूत को साथ लेकर, उत्तर-समुद्र की ओर चल पड़ा। आये हुए जहाजों में इसने साल और ह्वेल मछलियों का तेल, मोम, ऊन और कुछ जानवरों के सुन्दर खाल तथा कुछ सूत साथ ले लिया। अब यह इंगलैंड की ओर चल पड़ा। पर अबकी बार इसके दो जहाज टूट गये और तीसरे का बहुत दिनों तक पता न चला। चौथे जहाज में चेंसलर स्वयं था। स्काटलैंड के किनारे आते ही वहाँ के डाकुओं ने चेंसलर का, सब माल छीन कर, मार डाला।



सर फ्रंसिस ड्रेक

सर फ्रैंसिस ड्रेक

जन्म—सन् १५३९ ई०, मृत्यु-

सर फ्रैंसिस ड्रेक का जन्म टैविस्टा
अँगरेज नाविकों में इसी ने सबसे पह
क्रमा की थी। इसका पिता डिवनशा
बाल्यावस्था में इसने नाव चलाने औ
सीखी थी। फिर होगर वैंक में एक
तक काम सीखता रहा। जब हाकिन्स
कुछ हब्शियों को लाने के लिए गया
साथ था। इन हब्शियों को पकड़
वेस्ट इंडीज में स्पेन-निवासियों के
ड्रेक का मुख्य कार्य था। इस
लाभ होता था, क्योंकि स्पेनवाले
लेने को तैयार रहते थे। हाकिन्स
थे। इसी व्यापार के लिए हाकिन्स
किनारे जा पहुँचे। स्पेन के
कि अँगरेज लोग स्पेनवालों
बेचकर बहुत सा धन इकट्ठा
और भी हुआ कि

रघाना म आना-जाना आरम्भ किया है। अब उसने यह घोषित कर दिया कि स्पेनवाले न तो अँगरेजों स कोइ वस्तु खरीदें और न उनके हाथ कुछ बेचें।

इसी कारण हाकिस और ड्रेक तथा स्पेन के बीच लडाइ छिड गई। ड्रेक वहाँ से किसी प्रकार प्राण बचाकर भाग निकला और इँगलैंड पहुँचा। मार्ग में उसे बहुत कष्ट मिला। खाने पीने का सामान घट गया, अन्त में विवश होकर कुछ लोगों को एक द्वीप म उतार देना पडा। सन् १५६८ ई० म यह कार्नवाल पहुँचा। स्पेनवालों क अत्याचार क किस्से ड्रेक से सुनकर अँगरेज बहुत ही उत्तेजित हुए। उन्होंने हर तरह से ड्रेक की सहायता करने की इच्छा प्रकट की।

स्पेन और इँगलैंड में अब तक मित्रता का भाव था, लेकिन ड्रेक की कहानियाँ सुनने क बाद दोनो जातियों मे शत्रुता का भाव उत्पन्न हो गया। तुम्हे पेरू विजय की कथा का स्मरण होगा। वहाँ सोना-चाँदी इतना अधिक था कि स्पेनवाले जहाजो में भर भरकर पनामा भेज देते थे और वहाँ से खच्चरा पर लादकर नौंवर डिडिग्रोस में भेजते थ। यह नगर एटलांटिक महासागर क किनार पर है। यहाँ पैसिफिक महासागर क जहाज नहीं आ सकते थे, माल पनामा में उतारना पडता था और वहाँ से मनुष्य या पशु ढो-ढोकर डरिग स्थल-सयोजक के पूर्वी तट पर ले आते

थे। आज-कल पनामा नहर बन गई है और प्रशान्त महा-सागर के जहाज एटलांटिक महासागर में, कुछ ही घण्टों में पहुँच सकते हैं।

ड्रेक ने उन जहाजों के बारे में, जो नौंबर डिडिमौस [illegible] से माल लादकर स्पेन ले जाते थे, सुना था। उन्हीं को [illegible] उसने अपने अपमान का बदला लेना चाहा। सन् [illegible] ई० में दो जहाज और कुछ किश्तियाँ साथ लेकर [illegible] की ओर चला और नौंबर डिडिमौस जा [illegible]। [illegible] देखते ही स्पेनवाले भाग गये। अब उसने [illegible] को लूट लेना चाहा, पर दुर्भाग्यवश वह [illegible], अँगरेजों ने उसको जहाज पर पहुँचा दि[illegible]। [illegible] कार्य बन्द न हुआ।

कुछ दिनों में ड्रेक अच्छा [illegible] निवासी किमैरन लोगों से मेल कर [illegible] के कठोर व्यवहारों से बड़े ही [illegible] चाहते थे। एक दिन उन्होंने ड्रेक [illegible] स्पेनवाले नौंबर डिडिमौस में [illegible] खबर पाते ही ड्रेक ने थोड़े से [illegible] प्रस्थान किया और रास्ते [illegible] दुर्गम था, लेकिन देश के [illegible] मुग्ध कर लिया और इस [illegible] हुआ। चलते चलते [illegible]

से वह पूर्व के एटलांटिक महासागर को और पश्चिम के प्रशान्त महासागर को देख सकता था।

प्रशान्त महासागर को देखते ही, तत्काल ड्रेक के हृदय में जगत् की परिक्रमा करने का ... पर जिस लूट के कार्य के लिए वह गया था वह पूरा न पाया। स्पेनवालों को उसके आगमन का पता लग गया था। फिर भी उसने कई बार हमला करने की चेष्टा की। अन्त में कुछ धन उसके हाथ लग गया। सन् १५७२ ई० में वह घर वापस गया। जब अँगरेजों ने सुना कि ड्रेक ने इस प्रकार स्पेनवालों से बदला लिया है तो वे बहुत सन्तुष्ट हुए। लेकिन रानी एलिजाबेथ ने उसके काम को पसन्द न किया।

सन् १५७७ ई० में ड्रेक एक बार फिर रवाना हुआ और रानी एलिजाबेथ ने भी अबकी बार स्पेनवालों से असन्तुष्ट होकर उसे कुछ रुपया दिया। १३ दिसंबर सन् १५७७ ई० में ड्रेक मारको की ओर गया और जब वह वहाँ पहुँचा उसको बहुत ही सुन्दर जल-वायु का अनुभव हुआ। जाड़े की ऋतु थी। वर्षा हो रही थी, पेड़ हरे-भरे थे। अंगूर, जैतून, नारङ्गी और शहतूत चारों ओर दिखाई पड़ते थे, लेकिन अधिक विलम्ब न कर ये लोग केप वर्ड द्वीप-पुञ्ज में पहुँचे। यहाँ इन्होंने मदिरा से लदे हुए एक जहाज को पकड़ा। फिर ये ज्यों ज्यों दक्षिण-पश्चिम में चलने लगे, हवा भी अत्यन्त वेग से बहती हुई मालूम होने लगी और अन्त में एक ऐसे स्थान

से वह पूर्व के अटलांटिक महासागर को और पश्चिम के प्रशान्त महासागर को देख सकता था।

प्रशान्त महासागर को देखते ही, बल्बोवा के सदृश, ड्रेक के हृदय में जगत् की परिक्रमा करने की प्रबल इच्छा हुई, पर जिस काम के करने के लिए वह गया था वह पूरा न हो सका। स्पेनवालों को उसके आगमन का पता लग चुका था। फिर भी उसने कई बार हमला करने की चेष्टा की। अन्त में कुछ धन उसके हाथ लग गया। सन् १५७३ ई० में वह घर वापस गया। जब अँगरेजों ने सुना कि ड्रेक ने इस प्रकार स्पेनवालों से बदला लिया है तो वे बहुत सन्तुष्ट हुए। लेकिन रानी एलिज़ाबेथ ने उसके काम को पसन्द न किया।

सन १५७७ ई० में ड्रेक एक बार फिर रवाना हुआ और रानी एलिज़ाबेथ ने भी अबकी बार स्पेनवालों से असन्तुष्ट होकर उसे कुछ रुपया दिया। १३ दिसंबर सन् १५७७ ई० में ड्रेक मोरक्को की ओर गया और जब वह वहाँ पहुँचा उसका बहुत ही सुन्दर जल-वायु का अनुभव हुआ। जाड़े का ऋतु था। वर्षा हो रही थी, पेड़ हरे-भरे थे। अंगूर, जैतून, नारङ्गी और शहतूत चारों ओर दिखाई पड़ते थे, लेकिन अधिक विलम्ब न कर ये लोग कप वर्ड द्वीप पुञ्ज में पहुँचे। यहाँ इन्होंने मदिरा से लदे हुए एक जहाज को पकड़ा। फिर ये ज्यों ज्यों दक्षिण पश्चिम में चलने लगे, हवा भी अल्प वेग से बहती हुई मालूम होने लगी और, अन्त में एक ऐसे स्थान

में आ पहुँचे जहाँ हवा बिल्कुल रुक गई और जहाज बहुत धीरे धीरे चलने लगा।

तुमने शान्त कटिबन्ध का नाम सुना होगा। इसको विषुवत रेखा के पास डालड्रम भी कहते हैं। यहाँ हवा बहुत धीरे-धीरे चलती है। ड्रेक के जहाज डालड्रम में आ पहुँचे थे और हवा न चलने के कारण उस समय के, पाल लगे हुए, जहाज वेग से नहीं चल सकते थे। जब ये लोग और आगे बढ़े तो इनको फिर वृष्टि और आँधी का सामना करना पड़ा।

आकाश में बिजली चमक रही थी और लगातार मेघ-गर्जन होता था। ५४ दिन के पश्चात् ये लोग ब्रेजील के तट पर पहुँचे। जब इन्होंने देखा कि यहाँ के निवासी इनके नाश के लिए तैयार बैठे हैं तो और दक्षिण की ओर चले और प्लेट नदी के मुहाने पर पहुँचे। यहाँ इनको स्वच्छ पानी मिला पर ये लोग आगे बढ़ते ही गये और सेंट जुलियन बन्दरगाह में पहुँचे। यहाँ समुद्र में सील मछलियाँ बहुत दिखाई पड़ीं और पैटेगोनिया के पठार में दैत्याकार मनुष्य देख पड़े।

ये लोग अँगरेजों से बहुत बड़े थे। इनके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था। नाचते-कूदते ये लोग अपने देश की वस्तुएँ—जैसे एमू चिड़िया और उसके पर—लेकर परदेशियों के पास आये। इन्होंने उनको यह सब दे दिया।

परन्तु जब अँगरेज इनको कुछ देने लगे तो इन्होंने अपने हाथ से नहीं लिया किन्तु उनको भूमि पर रखने के लिए संकेत किया।

दो महीने तक सेंट जुलियन में रहकर ड्रेक कुल तीन जहाज़ों के साथ दक्षिणी अमेरिका के धुर दक्षिण की ओर बढ़ा। यह जब मैगिलन जल-प्रयाजक में पहुँचा तब इसने देखा कि पश्चिमी राह बहुत टेढ़ा-मेढ़ी है और समुद्र भी कम गहरा नहीं है। यहाँ के किसी द्वीप में इनको बहुत से पक्षी मिले। इन पक्षियों को इन्होंने, मारकर खाने के लिए, जहाज में भर लिया। जब ये लोग प्रशान्त महासागर में पहुँचे तो इनका एक जहाज आँधी से डूब गया और दूसरा घर वापस गया।

ड्रेक एक ही जहाज के साथ उत्तर की ओर किनारे-किनारे चला और वालपरजो पहुँचा। यहाँ सोने के माल से भरे हुए एक जहाज को उसने गिरफ़्तार कर लिया और वहाँ उतरकर लूटना आरम्भ किया। धन के लोभ से अँगरेज अब बार-बार जहाज से उतरने लगे। इस तरह बहुत सा माल उनके हाथ लगा। जब ये पेरू के किनारे पर पहुँचे तो इन्हें कुछ लामा (एक प्रकार के ऊँट) भी मिले। उन्हें इन लोगों ने खाने के लिए जहाज पर लाद लिया। लीमा में ड्रेक ने १७ जहाज लूटे। आगे चलकर एक और स्पेनी जहाज को लूटा जिसमें इसको बहुत सा सोना और चाँदी मिली। लूट का सामान इतना हो गया था कि स्पेनवाले इन अँगरेज़ों के पक्के शत्रु हो

गये थे और बहुत दिनों तक यहाँ ठहरना ड्रेक के लिए उचित न था। वह मैगिलन जल-संयोजक के रास्ते से भी नहीं लौट सकता था। वहाँ इसके शत्रु स्पेनवाले इसके लौटने की ही प्रतीक्षा में बैठे थे कि इसने प्रशान्त महासागर के पार करने की ठानी, और उत्तर की ओर अनुकूल हवा के लिए चल दिया। डेढ़ महीने चलने के बाद ड्रेक सानफ्रांसिस्को में पहुँचा।

अभी तक कोई यूरोप-निवासी यहाँ नहीं आया था। यहाँ के देशी लोगों ने इन अँगरेज़ों को देवता मानकर इनका प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। ड्रेक ने इस जगह का नाम नवीन गिलनियन रक्खा और एक खम्भा गाड़ दिया जिसमें अपने आगमन की तिथि और समय लिख दिया तथा यह भी सूचित कर दिया कि यह स्थान अब अँगरेज़ों का है। महारानी एलिज़ाबेथ का चित्र भी वहाँ रख दिया। यहाँ से ढाई महीने के पश्चात् ड्रेक फिलिपाइन द्वीप पहुँचा और वहाँ से मोरक्को के लिए चल दिया। यहाँ के एक द्वीप के राजा ने इसकी बड़ी आवभगत की और इसे चावल, चीनी, केला, लौंग और मुर्गियाँ भेंट में दीं। इन द्वीपों की शोभा अपूर्व थी। लेकिन ड्रेक को घर लौटना था इसलिए इस सौन्दर्य का उपभोग करने के लिए वह यहाँ अधिक दिन तक न रुक सका और द्वीप-पुञ्ज के दुर्गम मार्गों से होकर वह जावा द्वीप में गया। वहाँ से सीधे उत्तमाशा अन्तरीप की ओर चला, फिर उसको पार करते हुए सिअरालिओन में पहुँचा। यहाँ से प्लीमथ की ओर

चला और सन् १५८० ई० में तीन वर्ष के पश्चात् वह घर पहुँचा। रानी एलिज़ाबेथ बहुत सन्तुष्ट हुई। उसने इसको जहाज़ ही पर नाइट की उपाधि दी। सन् १५८५-८६ ई० में इसने खोज का काम नहीं किया, पर पश्चिमी द्वीप-समूह में जाकर कई द्वीप छीन लिये। सन् १५८७ ई० में इसने स्पेन के बेड़ा पर हमला किया और स्पेनवालों को कई बार युद्ध में परास्त किया।

तुमने स्पेनिश आर्मेडा (जहाज़ी बेड़ा) का नाम सुना होगा। इस युद्ध में सफलता पाना भी इसी का कार्य था। सन् १५८६ ई० में यह पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया। फिर एक बार हाकिंस के साथ पश्चिमी द्वीपसमूह में गया और जहाज़ पर बीमार पड़ा। सन् १५६५ ई० में, नौबर डिडिओस के बन्दरगाह में, इसका देहान्त हो गया।

सर मार्टिन फ्रोविशर

जन्म--सन् १५३६ ई०, मृत्यु--सन् १५९४ ई०

उत्तरी-पश्चिमी राह से कैथे या चीन पहुँचने की कैबट की इच्छा पूरी न हो पाई थी। उसके बाद भी कुछ दिनों तक ऐसा कोई नाविक नहीं हुआ जो उस कार्य को पूरा करता। विलोबी और चैंसलर के बारे में तुम्हें याद होगा कि उत्तर-पूर्व की राह से भी वे कैथे नहीं पहुँच सके थे। इस देश में जाने की आशा अब अँगरेजों ने प्राय त्याग ही दी थी, पर सन् १५७४ ई० में जब सर हम्फ्रे गिलबर्ट की किताब छपी और उसने लोगों के दिल पर यह बात अच्छी तरह से बैठा दी कि कैथे में उत्तर-पश्चिम की राह से पहुँचना असम्भव नहीं है, तो इँगलैंड के कुछ सौदागरों ने मिलकर किसी ऐसे आदमी को भेजना चाहा जो इस कार्य्य को पूरा कर सके। सर मार्टिन फ्रोबिशर तैयार हो गया।

यह एक अँगरेज नाविक था। इसका जन्म डॉनकैस्टर में हुआ था। बचपन से ही यह नौ-चालन के कार्य में लग गया था। तीन जहाजों के साथ सन् १५७६ ई० में डेप्टफोर्ड से यह रवाना हुआ। ब्रिटेन के उत्तरी हिस्से को पार करते हुए आर्कनीज और शटलैंड द्वीप-पुञ्ज से होता हुआ यह सीधा

पश्चिम की ओर चला। एक मास के पश्चात् इसे ग्रीनलैंड दृष्टिगोचर हुआ। उस बर्फ से ढकी भूमि के पार उतरना असम्भव था, इसलिए वह, साथियों सहित, लैब्रेडर की ओर चला। समुद्र में बहती ठण्डी धारा थी। बड़ी बड़ी साल और ह्वेल मछलियाँ दिखाई पड़ती थीं। पहाड़ के ऊँचे बर्फ के टुकड़े तैरते हुए दिखाई पड़ते थे। ये बर्फ के पहाड़ स्वाद में मीठे थे लेकिन समुद्र का पानी बहुत खारा था। कहीं कहीं बर्फ के ढोंके टूटकर इतने वेग से गिरते थे कि उनके शब्द से कान बहरे हो जाते थे। ह्वेल मछलियाँ इतने भयङ्कर शब्द के साथ नाक से पानी का फव्वारा छोड़ती थीं कि यदि कोई जहाज सामने पड़ जाय तो बिना डूबे न बचे। कभी कभी तो जब वे पानी के ऊपर आती थीं तो दूर से छोटे-मोटे द्वीप सी प्रतीत होती थीं।

फ्रोबिशर के जहाज कुछ दिनों में एक द्वीप के पास पहुँचे। यहाँ इनको किनारे पर थोड़े से मनुष्य दिखाई पड़े। ये लोग फ्रोबिशर के जहाज देखने आये थे। ये तातारियों की तरह लम्बे थे, इनका रङ्ग भूरा, बाल काले, नाक चिपटी और चेहरा फैला हुआ था। ये साल मछली का चमड़ा पहने हुए थे। इनकी किश्तियाँ किनारे पर खड़ी थीं जो सील मछली के चमड़े से मढ़ी हुई थीं।

फ्रोबिशर का दल लैब्रेडर में उतरना चाहता था, परन्तु जब बर्फ के ढोंके टूटकर किनारे से समुद्र में गिरने लगे

तो वह जत्था वहाँ से वापस चला और बैफिनलैड के निकट फ्रोबिशर खाड़ी में पहुँचा। निकट की भूमि को एशिया समझकर ये लोग किनारे उतरे। वहाँ की ऊँची भूमि से इन्होंने समुद्र में कुछ काली काली वस्तुओं को तैरते देखा। जब वे निकट आईं तो देखा कि ये मछलियाँ नहीं, बल्कि चमड़े से मढ़ी हुई किश्तियाँ हैं। किश्ती पर से उतरने पर इन लोगों को घण्टी बजाकर और शीशे में अपना प्रतिबिम्ब दिखाकर आश्चर्यान्वित किया जाने लगा। जब इनका विश्वास हो गया तो अँगरेजों ने इनको यही घण्टियाँ और शीशे दे दिये। ये एस्किमो लोग थे। एस्किमो लोगों ने भी भालुओं और सील मछलियों के चमड़े दिये। फ्रोबिशर ने इनमें से एक मनुष्य को पकड़कर इँगलैंड ले जाना चाहा। बहुत चालाकी से उसने एक को पकड़ लिया। पहले तो कोई पास नहीं आया लेकिन फ्रोबिशर ने जहाज पर बैठे बैठे घण्टी बजाना आरम्भ किया और ज्यों ही एक एस्किमो छोटी सी किश्ती लेकर निकट आया, हाथ पकड़कर उसको खींच लिया। जब उस एस्किमो ने देखा कि वह कैद हो गया है तो मारे क्रोध के दाँतों से अपनी जीभ काटने लगा। पर फ्रोबिशर ने उसको नहीं छोड़ा। सब जो चार-पाँच अँगरेज किनारे पर उतरे थे उनको इन एस्किमो लोगों ने पकड़कर न मालूम कहाँ छिपा दिया।

सन् १५७६ ई० में फ्रोबिशर इस कैदी के साथ—भालू और सील मछली के चमड़े और एक काला पत्थर लेकर—

इँगलैंड पहुँचा। कैथे का रास्ता मिलने की खबर पाकर लोग बहुत सन्तुष्ट हुए। इस काले पत्थर की परीक्षा के पश्चात् जब उनको यह ज्ञात हुआ कि इसमें सोना है तो उनका लोभ बहुत बढ़ा। उन्होंने दुबारा फ्रोबिशर को सन् १५७७ ई० में वहाँ भेजा। अबकी बार भी यह आस-पास के दो एक स्थानों का पता लगाकर, कुछ काले पत्थरों को इकट्ठा करके, इँगलैंड की ओर चल दिया। रानी एलिज़ाबेथ बहुत सन्तुष्ट हुई। तीसरी बार सन् १५७८ ई० में फ्रोबिशर रवाना हुआ। जब फ्रोबिशर कनाडा के पास आया तब आँधी इतने वेग से चली कि फ्रोबिशर का जहाज हडसन जल संयोजक में जा पहुँचा और कैथे जाने का ठीक मार्ग मिल गया, लेकिन मौसमी आँधी के कारण ये लोग घर को लौट चले। वहाँ पहुँचते ही इनको ज्ञात हुआ कि ये काले पत्थर किसी काम के नहीं हैं। अब इनको चौथी बार कौन भेजता? सोना मिलने की भी कोई आशा नहीं थी और चीन पहुँचने के कार्य में भी उन्नति न हुई थी। सन् १५८५ में फ्रोबिशर ने ड्रेक के साथ पश्चिमी द्वीपसमूह में कार्य किया और सन् १५८८ ई० में वह स्पेनिश आर्मेडा के युद्ध में भी था। सन् १५९४ में ब्रेस्ट का दुर्ग लेते समय वह मारा गया।



सर वाल्टर रेले



मंगो पार्क



डेविड लिविंग्स्टन

सर वाल्टर रेले

जन्म—सन् १५३२ ई०, मृत्यु—सन् १६१८ ई०

फ्रोबिशर की मृत्यु के पश्चात् जॉन डविस ने उत्तरी अमेरिका में डेविस जल-सयोजक का पता लगाया। वह ग्रीनलैंड और जीलैंड होते हुए ७३ उत्तरी अक्षांश तक पहुँचा। इसके पश्चात् उसने उत्तरी-पश्चिमी राह का पता लगाना छोड दिया। पर कई बार वह पूर्वी द्वीप-समूह में गया और जापानी जल-दस्युओं ने मलक्का के निकट उसे मार डाला।

हेनरी हडसन ने इसके पश्चात् हडसन जल-सयोजक का पता लगाया। फिर उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे को छूते हुए वह ४० उत्तरी अक्षांश में पहुँचा। यहाँ जो नदी गिरती है उसका नाम उसने हडसन नदी रक्खा। सन् १६१० ई० में वह हडसन की खाडी में पहुँचा। खाने का सामान चुक जाने पर उसको विवश होकर लौटना पडा। रास्ते में साथियो ने उसको और उसके पुत्र को छोटी सी किश्ती में उतार दिया। कोई नहीं जानता कि फिर उनका क्या हुआ।

विलियम बैफिन ने सन् १६१२ ई० में इस कार्य को उठाया पर किसी देश का पता नहीं लगा। सन १६१६ ई० में उसने बैफिन की खाडी का पता लगाया। फिर उत्तर-पश्चिम की राह

का ढूँढ़ा जाना बन्द हो गया। सन् १६२१ ई० में ऑरमज के पास पुर्तगालियों से लड़ते लड़ते वह मर गया।

सन् १५७८ ई० में अनुमति पत्र लेकर सर हम्फ्रे गिलबर्ट ने न्यूफाउंडलैंड को अँगरेज़ों के अधिकार में कर लिया। इस द्वीप के पास उत्तरी ठण्डी धारा में, जिसको लैब्रेडर धारा कहते हैं दक्षिणी मेक्सिको की गर्म धारा आ मिलती है और कुहरा छा जाता है। जहाज़ों के लिए यह स्थान निरापद नहीं है। यहाँ कॉड मछलियाँ पाई जाती हैं। न्यूफाउंडलैंड में चाँदी और अन्य खनिज पदार्थ मिलने की बहुत आशा थी। थोड़ी सी चाँदी इसको मिली। खाने पीने के लिए यहाँ के लोगों ने चपातियाँ और मदिरा दी। फल, घास और तारपीन का तेल बहुत मिला। किन्तु गिलबर्ट के नाविक आपे से बाहर हो रहे थे और अत्याचार भी अधिक हो गया था।

इसने सन् १५७४ ई० में चीन जाने के रास्ते के बारे में लिखा था और लोगों को उत्तेजित किया था। दूसरी बार जब यह अमरिका से लौट रहा था, इसका जहाज़ डूब गया। इसके सौतेले भाई सर वाल्टर रले ने न्यूफाउंडलैंड लेते समय इसकी बड़ी सहायता की थी।

सर वाल्टर रेले का जन्म डिवेनशायर के हेयास नगर में सन् १५३२ ई० में हुआ था। वरजीनिया में इसने आदमियों का एक टुकड़ी भेजी और कुआँरी रानी एलिज़ाबेथ के नाम से इसको प्रसिद्ध किया। रेले ने इसी देश से पहले अपने

देश में तम्बाकू और आलू पहुँचाया। इसने एल्डोरेडो के विषय में यह सुना था कि वह सोने-चाँदी से भरा पड़ा है। वह अब गायना के नाम से विख्यात है। इसी देश की खोज में रेले निकला। ओरीनोको नदी में इसने छोटी छोटी किश्तियाँ डाल दीं। जहाजों को पीछे छोड़कर यह अग्रसर हुआ। वर्षा खूब हो रही थी। नदी में बाढ़ आ गई थी। उस देश के लोगों ने पेड़ों पर अपने झोंपड़े इसलिए बना रक्खे थे कि बाढ़ में बह न जायँ। यहाँ गर्मी भी बहुत है। रेले के साथी घबरा गये थे। लेकिन जब ये किनारे पर उतरे तो देश बहुत सुन्दर प्रतीत हुआ। पेड़ फले हुए थे और रङ्गीन चिड़ियाँ इधर-उधर उड़ रही थीं। यहाँ के निवासी पुर्तगालवालों से बहुत घबराते थे। जब उन्होंने सुना कि ये पुर्तगाल के रहने-वाले नहीं हैं तो उन्होंने इनको मदिरा, फल, चिड़ियाँ, कछुओं के अंडे और रोटियाँ ला दीं। अब गायना पर्वत का भी पता लग गया। बड़े भयङ्कर झरने और ऊँची ऊँची घास दिखाई पड़ी। हिरन चर रहे थे। पेड़ों पर बैठकर पक्षी सुरीली बोलियाँ बोल रहे थे। इस स्थान को यहाँ पर लैनोस कहते हैं। दक्षिणी अमेरिका में यह बड़ी अच्छी जगह है। लैनोस से बड़े बड़े पत्थर के टुकड़े साथ लेकर रले घर की ओर वापस चला। रास्ते में इसको ट्रिनिडाड द्वीप मिला।

सन् १६०३ ई० में रले से जेम्स प्रथम का झगड़ा हो गया। उसने रेले को कैद कर लिया। पर सन् १६१७ ई० में

यह छोड़ दिया गया, क्योंकि राजा को इसने गायना से सोना और चाँदी ला देने की आशा दिलाई थी। राजा ने स्पेनवालों से न लड़ने के लिए भी बार बार इससे कह दिया था। पर रले ने वहाँ जाते ही स्पेनवालों से झगड़ा कर लिया। यह समाचार पाकर राजा जेम्स ने स्पेनवालों को सन्तुष्ट करने के लिए इसे मरवा डाला।

रले ऊँचा पूरा वीर पुरुष था पर था बड़ा घमण्डी। कहा जाता है कि बुद्धिमान्, चरित्रवान् और उत्साही पुरुषों में यह अद्वितीय था। रानी एलिज़ाबेथ का यह प्रिय सदस्य था। एक बार रानी वर्षा के पश्चात् टहलने के लिए घर से निकली तो रास्ते में उसको कुछ कीचड़ मिला। रानी एलिज़ाबेथ अपने जूते को बचाने के लिए वहीं खड़ी हो गई। रेले रानी से मिलने के लिए आया हुआ था। उसने बिना सोच-विचार के अपना नया कोट वहाँ फैला दिया और रानी पार हो गई। रेले के इस व्यवहार पर वह बहुत सन्तुष्ट हुई और तभी से मृत्यु-पर्यन्त रेले रानी के प्रिय पात्रों में गिना जाने लगा।

जेम्स कर्टियर

जन्म—सन् १४९४ ई०, मृत्यु—सन् १५५५ ई०

जिस प्रकार अँगरजों की ओर से कैबट, फ्रोबिशर, डेविस, हडसन आदि नाविक उत्तरी अमेरिका के उत्तरी भाग की खोज में लगे हुए थे उसी प्रकार फ्रांसीसी भी अपने नाविकों को इसी कार्य के लिए भेजते रहे। फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम ने जेक्स कर्टियर को सन् १५३४ ई० में भेजा। जेक्स का जन्म सेंट मालो में हुआ था। वह न्यूफाउंडलैंड के निकट पहुँचा। यहाँ पर उसने एक द्वीप में बहुत सी चिड़ियाँ देखीं। इन चिड़ियों की खोज में सफेद भालू भी समुद्र में तैर रहे थे। बस, इन्हीं चिड़ियों और भालुओं का शिकार फ्रांसीसियों ने किया। फिर न्यूफाउंडलैंड के उत्तरी किनारे से होते हुए जेक्स ने बेली जल-संयोजक का पता लगाया। इसके बाद वह प्रिंस एडवर्ड द्वीप तक पहुँचा।

यह द्वीप बहुत ही सुन्दर था। पेड़ों के पत्ते हरे रङ्ग के थे। सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी और पेड़ों में अनेक प्रकार के बेर लगे हुए थे। गर्मी बहुत ही अधिक थी। ऋतु [illegible] न थी। इसलिए कर्टियर फिर उत्तरी राह से

फ्रांस लौट गया। चलने के पूर्व न्यू ब्रसविक से इसने यहाँ के दो मनुष्यों का साथ ले लिया।

सन् १५३५ ई० में कर्टियर फिर लैब्रेडर के किनारे आया और अब की बार न्यू ब्रसविक के उन दोनों आदमियों ने, जिनको कर्टियर फ्रांस में ले गया था, रास्ता बताने में बहुत सहायता दी। इन्होंने कर्टियर को सेंट लारेंस की राह से देश के अन्दर जाने को कहा। कर्टियर चल पड़ा। रास्ते में उसने बहुत से अद्भुत जल-जन्तुओं को देखा। इनको अँगरेजी में वालरस कहते हैं। ऐसे जानवर प्रायः ठण्डे समुद्र में ही पाये जाते हैं।

चलते चलते कर्टियर अपने साथियों के साथ सेंट लारेंस नदी के मुहाने पर आ गया। उसने समझा कि एशिया जाने का रास्ता मिल गया है। परन्तु ज्यों ज्यों वह अन्दर की ओर बढ़ता गया, उसको पानी मीठा मालूम होता गया। अभी तक लोग यही जानते थे कि एशिया और योरप के बीच में खारा समुद्र है, मीठा नहीं।

अब वह क्वेबेक पहुँचा और वहाँ अपने बड़े बड़े जहाजों को छोड़कर छोटी छोटी नावों में मांट्रील गया। मांट्रील माटरोयल शब्द से बना है। 'मांटरायल' का अर्थ राज-पर्वत है। यह छोटा सा गाँव पहाड़ पर बसा था। यहाँ से फिर ये लोग लौटे और रास्ते में, सर्दी के कारण, बहुत से बीमार पड़े और मर गये। अबकी बार ये लोग बहुत से

अमेरिका-निवासियों को अपने साथ ले आये और न्यूफाउंडलैंड के दक्षिणी रास्ते से गये। इस रास्ते को कैवट जल-संयोजक कहते हैं। कैवट ने ही पहले इसका पता लगाया था।

सन् १५४१ ई० में फिर अन्तिम बार कर्टियर ने सेंट लारेंस नदी में पैर रक्खा। यहाँ क्वेबेक का क़िला बनवाया परन्तु मांट्रील के पश्चिम की ओर इतने झरने थे कि आगे बढ़ना असम्भव हो गया। अब यह सन् १५४२ ई० में फ्रांस वापस आ गया। सन् १५५५ ई० में इसका देहान्त हो गया।

इसने शैंप्लेन झील का पता लगाया। इसके पश्चात् शैंप्लेन कनाडा में आता रहा। इसने चौडियर जल-प्रपात और ओटावा का पता लगाया। सन् १६१५ ई० में इसने जार्जियन का खाड़ी और ह्यूरन झील का पता लगाया। फिर वहाँ से ह्यूरन के निकट के कुछ अमरिकावालों के साथ इसने ओंटा-रियो झील को पार किया। इन मनुष्यों के विपक्षी दल ने इसको घायल किया और यह क्वेबेक लौट गया।

योरपवालों में शैंप्लेन ही पहला मनुष्य था जिसने अमे-रिका के अन्दर झीलों देशों और मनुष्यों का पता लगाया। सन् १६२० ई० में यह कनाडा का गवर्नर नियुक्त किया गया। यहाँ इसने अपनी जल यात्राओं के विषय में एक प्रबन्ध लिखा। सन् १६३५ ई० में इसका देहान्त हो गया।



मंगो पार्क

जन्म—सन् १७७१ ई०, मृत्यु—सन् १८०६ ई०

अफ्रिका के समुद्री किनारे की भूमि का पता तो यारप-वालों ने लगा ही लिया था पर अन्दर जाने का साहस बहुत थोड़े लोगों ने किया था। जैसे विषुवत रेखा के पार फिरे जाने के पहले समुद्र के विषय में बहुत अद्भुत और भयङ्कर कहानियाँ रची गई थीं वैसे ही इस देश के भीतरी हिस्से के बारे में भी बड़ा भयङ्कर कथा सुनने में आता था। वास्तव में ये किस्से ठीक भी थे। देश या तो उजाड़ खण्डों से भरा है या जङ्गलों से। यहाँ पशु भी बहुत भयङ्कर हैं और असभ्य नर-भक्षकों की अधिकता है जिनके मारे लोग भीतरी हिस्से तक नहीं पहुँच सके थे। इसी से अब तक अफ्रिका को अज्ञात देश कहते थे। जो दो-एक साहसी पुरुष देश के अन्दर गये भी उनका फिर पता न चला। ऐसे देश में खोज का काम होना और सच्चा सही हाल जानना बड़ा ही कठिन है।

स्कॉटलैंड का रहनेवाला एक डाक्टर बड़ा साहसी था। यह पूर्वी द्वीप समूह में भी हो आया था। इसने अफ्रिका के अन्दर के देशों का पता लगाना चाहा। इसका नाम मंगो पार्क था। इसका जन्म सेलकर्क के निकट फाउल

गॉरस में हुआ था। इसने एडिनबरा विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई थी।

सन् १७९५ ई० में यह अफ्रिका के पश्चिमी किनारे की ओर नाइजर नदी का पता लगाने की इच्छा से चला। अभी तक लोगों का यही विश्वास था कि नाइजर नदी पश्चिम की ओर बहती है। नक्शा के देखने से तुम्हें ज्ञान हो जायगा कि खोज करनेवालों ने इन लोगों का कितना बड़ा भ्रम दूर किया है।

घर से चलने के एक महीना पश्चात् मंगो पार्क गैंबिया नदी के मुहाने पर पहुँचा। यह नदी गहरी थी। कीचड़ भी इसमें बहुत था। इसके किनारे पेड़ खड़े थे जिनकी जड़ें कभी तो पानी में डूबी थीं और कहीं निकली थीं। इनमें मगर और हिपापोटेमस भरे पड़े थे। इसी नदी में मंगो पार्क ने अपनी किश्ती डाली। पूर्व की ओर चलते चलते यह पिसैनिया में पहुँचा। यह अंगरेजों के माल इकट्ठा करने की जगह थी। यहाँ सोने और हाथीदाँत का ढेर लगा था। बिक्री के लिए यहाँ हब्शी भी इकट्ठा किये जाते थे। इस देश की भाषा सीखने के लिए यह यहाँ रुक गया, पर बीमार पड़ गया। बरसात का मौसम आ गया था। यहाँ दिन में बहुत ही गर्मी पड़ती है। जब धूल से भरी हुई आँधी चलने लगती है तो दम घुटने लगता है। बारिश इतनी तेजी से होती है मानों आकाश टूटा पड़ता हो। मेघ गर्जन भी

भयानक है। रात्रि के समय भटक बोलने लगते हैं। लोमड़ियाँ और लकड़बग्घे इतने जोर से चिल्लाते हैं कि किसी नये आदमी के लिए वहाँ थोड़ी देर भी ठहरना भयावह होता है।

इस प्रान्त में वर्षा गर्मियों में होती है और जाड़े में सूखा पड़ता है। दो ही मौसम होते हैं। मंगो पार्क सूखे के दिनों में अच्छा हो गया और पिसैनिया से रवाना हुआ। इसने दो हबशियों को अपने साथ ले लिया। सामान लाने के लिए दो घोड़े और दो खच्चर भी इसने ले लिये। कुछ दूर चलकर इसके साथ छः और हबशी आ मिले। ये लोग मदीना आ पहुँचे। नकशे में देखो, यह अरब का मदीना नहीं है। मदीना के राजा ने इसको आगे बढ़ने की राय न दी, लेकिन इसने जब आग्रह किया तो उसने एक पथ प्रदर्शक साथ कर दिया। ये लोग कुनार पहुँचे। यहाँ इन्होंने देखा लोगों को कुश्ती लड़ते देखा। मंगो पार्क के साथी अब आगे बढ़ना नहीं चाहते थे, इसलिए एक पत्थर पर मन्त्र फूँककर उस पर थूकते थे और फिर उसी पत्थर को मार्ग की रक्षा के लिए अपने सामने फेंक देते थे। तीन बार ऐसा करने पर उनके हृदय में इतना विश्वास हो जाता था कि वे नाचते कूदते आगे बढ़ते थे। अब इनके सामने फेलेमी नदी पड़ी। यह सेनेगाल नदी की सहायक नदी है। नदी पार इस प्रदेश की राजधानी थी। मंगो पार्क वहाँ के राजा से जा मिला और उसे अपनी छतरी और कोट दे दिया। राजा

सन्तुष्ट हो गया। मंगो पार्क से रानियों ने भी बहुत से प्रश्न किये। इसका गोरा रङ्ग देखकर रानियों को बड़ा अचम्भा हुआ। उन्होंने कहा कि इसकी मा ने जन्म के पश्चात् इसको दूध में डुबा दिया था, इसी से यह गोरा है।

यहां से छुट्टी पाकर मंगो पार्क आगे बढ़ा। अब उसे सेनीगाल नदी दिखाई पड़ी। यह नदी इतनी गहरी न थी जितनी कि गंबिया। जल स्वच्छ था। नदी मन्द गति से रेतीली और पथरीली भूमि पर बहती थी। आसपास की भूमि ऊँची थी और उस पर हरी हरी घास थी। इसके निकट ही खेती होती थी। इस नदी को पार करके मंगो पार्क केसन राज्य में पहुँचा। यहाँ के राजा ने मंगो पार्क की आवभगत की और आगे बढ़ने में इसकी सहायता की। कार्टा पहुँचने पर इस गोरे आदमी को देखने के लिए बार बार लोग आने लगे। यहाँ से यह मूर लोगों की राजधानी गारा नगर में पहुँचा। यह नगर बहुत विस्तृत था। यहाँ के मकान मिट्टी और पत्थर के थे। राजा ने इसका पथ-प्रदर्शक देना अङ्गीकार कर लिया। अब इसके साथी आगे बढ़ने को तैयार न हुए। एक साथी के सिवा और सब भाग गये। इन दोनों के साथ मंगो पार्क उत्तर-पूर्व की ओर चला। रास्ते में मूर लोगों ने इसको बहुत सताया और इसका बहुत सा सामान छीन लिया। अन्त में निनाउन में यह पकड़ लिया गया। मूर लोगों ने इसको

अपने राजा के पास पहुँचाया। राजा एक गाड़े हुए एक सुन्दर मैदान में पड़ा था। इधर-उधर बकरियाँ चर रही थीं और बहुत से ऊँट तथा ढोर भी पास ही खड़े थे। यहाँ पश्चात् हो इसकी तलाशी ली गई और सार प्रभा के इसको प्र.गल्त कर दिया गया। यह जानने के लिए कि यह भी—हमीं की तरह—मनुष्य है, इसकी उँगलियाँ तक गिनी गईं। यह कैद कर लिया गया। एक सूअर के साथ रहने के लिए इसको जगह मिली। राजा ने इसका कुतुबनुमा ले लिया और जब देखा कि उसकी सुई, जिधर भी रखिए, एक ही ओर घूमती है तो उसे जादू का समझकर लौटा दिया।

बालको, क्या तुम भी इसी राजा की नाई कुतुबनुमा को देखकर घबराओगे? क्या तुम बता सकते हो कि यह सुई एक ही ओर क्यों घूमती है। भला बताओ तो वह कौन दिशा है जिधर यह घूमती है। मंगो पार्क यथेष्ट अपमानित हो चुका था। पर जब यह बीमार पड़ा और समूम हवा रेत के पहाड़ बनाने लगा तो बहुत घबराया। उसने वहाँ से भागना चाहा। मूर लोगों ने अपने शत्रुओं से लड़ाई छेड़ दी थी। अपने शत्रुओं को, आगे बढ़ने की, खबर पाकर वे भी उत्तर की ओर बढ़े। यहाँ मंगो पार्क से रानी की भेंट हुई। मूर लोगों ने इसके साथ अच्छा बर्ताव किया। पर वे लोग रेगिस्तान के निकट आ पहुँचे थे, और रेगिस्तान का कष्ट आरम्भ हो गया था। लोगों को जल अच्छी तरह से

नहीं मिलता था। यदि कहीं एक-आध कुआँ मिल भी जाता तो वहाँ इतनी भीड़ लगी रहती थी कि आपस में मार-पीट हो जाती थी। मंगो पार्क को विधर्मी समझकर वे लोग कुएँ के पास जाने ही न देते थे। जानवरों को भी बहुत कम पानी मिलता था और कभी कभी तो बेचारे गीली मिट्टी (कीचड़) को ही खाकर प्यास बुझाते थे।

मंगो पार्क को अब जर्रा जाने की अनुमति मिली। जब यह चला तो इतने वेग से आँधी चली कि इसके कान और नाक में धूल ही धूल भर गई। इसका दम घुटने लगा। जानवर घबराकर इधर-उधर दौड़ने लगे। मंगो को डर लगता था कि वह इनके पैरों के नीचे दबकर कहीं मर न जाय। इस प्रान्त में बुरके का व्यवहार कदाचित् इसी कारण होता है।

जर्रा में पहुँचते ही ज्ञात हुआ कि शत्रु निकट हैं। मारे डर के मूर लोग, मंगो पार्क का साथ लेकर, वापस लौटना चाहते थे। परन्तु एक दिन यह बहुत सबेरे भाग निकला। चलते चलते प्यास के मारे मरने लगा। उस समय बड़े वेग से पानी बरसने लगा। अपने कपड़ों में इस जल को इकट्ठा कर इसने पी लिया। बहुत कष्ट के बाद यह सेगो नगर में पहुँचा। इतने दुःख के पश्चात् इसको बहुत ही आनन्द हुआ क्योंकि अब इसे ज्ञात हो गया कि यह नाइजर के किनारे पहुँच गया है। मंगो लिखता है कि नाइजर टेम्स के बराबर चौड़ी है और धीरे धीरे पूर्व की ओर बहती है। सेगो नगर

बहुत ही समृद्धिशाली है। अफ्रिका के बीच में ऐसे नगर का होना उस समय बड़े आश्चर्य की बात थी।

सेगो पहुँचने के एक दिन बाद ही यह नदी के मुहान की ओर चल दिया और सिला में पहुँचा। नदी बढ़ी हुई थी। यह वहाँ से लौट पड़ा। इसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। रास्ते में जङ्गली जानवर भी अधिक थे, फिर हबशियों का भी डर था। इसलिए ऐसी अवस्था में नदी के मुहान तक पहुँचना असम्भव समझकर यह एक कारवाँ के साथ पिसैनिया गया। फिर एक जहाज पर बैठकर पश्चिमी द्वीप समूह गया और वहाँ से २१ वर्ष के बाद इँगलिस्तान पहुँचा।

सन् १८०५ ई० में मंगो पार्क दुबारा गैम्बिया की ओर चला। अबकी बार बहुत से सिपाहियों को साथ लेकर यह नाइजर नदी के पास पहुँचा। यहाँ इसने एक किश्ती कर ली। आठ आदमियों के साथ उसे खेता हुआ यह मुहान की ओर चला। टिंबकटू के बाजार में इसने अपनी वस्तुओं का आदान प्रदान किया। वहाँ से कुछ दूर पूर्व की ओर खेते हुए यह दक्षिण की ओर चला और बौसा में पहुँचा। यहाँ के निवासियों ने इस पर हमला किया और लगभग सन् १८०६ ई० में इसको मार डाला।

मंगो के अधूरे कार्य को लैंडर ने, सन् १८३० ई० में, पूरा किया। उसको नाइजर का मुहाना मिल गया।

जेम्स ब्रूस

जन्म-स्थान—किनायर्ड, सन् १७३० ई०, मृत्यु—सन १७९४ ई०

जेम्स ब्रूस स्कॉटलैंड का रहनेवाला था। खोज के कार्य में बचपन से ही इसको बहुत उत्साह था। पर इसे अवसर बहुत कम मिलता था। यह सन् १७६३ ई० में एलजीयर्स में अँगरेज सरकार की ओर से कौंसल (व्यापारी दूत) नियुक्त किया गया। यहाँ इसको अफ्रिका के भीतरी देश के बारे में बहुत से किस्से ज्ञात हुए। इसने अरबी भाषा भी सीख ली। सन् १७६८ ई० में यह काहिरा नगर में गया। वहाँ का बादशाह आकाश विज्ञान और वैद्यक सम्बन्धी इसके गुणों को सुनकर बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने नील नदी की खोज करने में इसकी यथासाध्य सहायता की। ३० गज लम्बी एक किश्ती लेकर ब्रूस नदी के उद्गम की ओर रवाना हुआ। हवा विपरीत दिशा में चल रही थी। बड़े बड़े पाल काम नहीं देते थे। नदी के आस पास भूमि हरी-भरी थी। पिरैमिड भी दृष्टिगोचर होते थे। अस्वान तक चलकर इसको जल-प्रपात मिले। इनको पार कर किश्ती को आगे बढ़ाना बहुत [illegible] था। इसलिए इसने केने तक वापस

जाना ठीक ममझा। यहाँ इसने किश्ती को छोड दिया। फिर कुछ कारवाँ क माथ यह लाल मागर की ओर चल दिया। थाडे म घोडो ऊँटो और हवशियों को इमने माथ ले लिया था। नरा म लाल मागर के रास्ते तक के वर्णन में यह लिखता है— "म कोई भी प्राणी न्ष्टिगोचर नहीं होता। पेड-पौधे का तो नाम तक नहीं है। पीने के लिए खारा पानी भी नहीं मिलता। ऐम जानवर भी नहीं मिलते जो प्राय रेगिस्तानों म पाये जाते हैं। आकाश में चिडियाँ भी नहीं दिखाई पडतीं।"

इस मार्ग मे चलना ठण्ड देश के रहनेवाले के लिए बडा कठिन कार्य था। पर धैर्य के साथ ब्रूस बढता ही गया। अब इसको रत के पहाड दिखाई पडने लगे। ज्यों ज्यों यह पूर्व की ओर चलता गया त्यो त्यों सङ्गमरमर के पहाड दिखाई पडन लगे। लाल सागर के किनारे सीयर नगर दिखाई दिया। यहा म किश्ती पर बैठकर ब्रूस सिनाई प्रायद्वीप गया, वहाँ स जद्दा पहुँचा। यहाँ एक महीना रहकर बाबुलमदब का ओर चला और वहा से घूमकर एबीसिनिया क पूर्वी तट पर ममावा नगर मे पहुँचा। इमने काहिरा क राजा की चिट्ठियाँ यहाँ क राजा को दीं। अब इसकी बडी आवभगत हुई। एबीसानिया के राजा के लडके बीमार पड थे, उसने ममावा क राजा को चिट्ठी लिखी कि उस अँगरेज डाक्टर को भेज दीजिए जो आपके यहाँ था। कुछ साथियों को लेकर ब्रूस एबीसीनिया की ओर चला। रास्ते म

एक नदी मिली, जिसमें लाल मिट्टी [illegible] । [illegible] के पश्चात् इतना पानी हो गया था कि [illegible] को डुबा दिया था। अब यह [illegible] । यहा के राजा ने अतिथि की बड़ा [illegible] । यहाँ विचित्रता यह थी कि चाँदी के [illegible] के रुपये काम में लाये जाते थे। [illegible] बात थी। पर जिन्होंने इस [illegible] को देखा है उन्हें आश्चर्य नहीं [illegible] मुख्य उपज गेहूँ, जौ और मटर है। [illegible] रानी गोंडर नगर है। इसी नगर का [illegible] । [illegible] दोनों ओर झाड़ियाँ थीं। अक्सर [illegible] और सिर निकलते थे। बड़ी बड़ी [illegible] थीं। मार्ग में काले आदमी प्राय इनको [illegible] । [illegible] फरवरी सन् १७७० ई० में यह गोंडर पहुँचा। [illegible] का राजा [illegible] में नहीं था, पर रानी ने [illegible] इसका [illegible] । [illegible] बच्चों का चेचक निकली थी। [illegible] के दरवाजे और [illegible] कियाँ बन्द कर दी गई थी। [illegible] ने दरवाजों और [illegible] कियों को खुलवा दिया और सफाई के लिए जोर [illegible] । राजकुमार अच्छे होने लगे। [illegible]

लोग बीमार पड़ गये, कुछ भाग गये और कुछ मर गये। स्पीक भी बीमारी से बहुत दुबला हो गया। फिर भी चलते चलते वे लोग करग्वे में पहुँचे। यहाँ के राजा ने उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। सन् १८६२ ई० में स्पीक सुन्दर युगांडा प्रदेश में पहुँचा। यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा है। केला अधिक उत्पन्न होता है। यहाँ मकानों में सफाई अधिक है। यहाँ के निवासी अपने राजा को सबसे अधिक शक्तिशाली मानते थे।

अभी तक नील नदी का पता नहीं चला था और स्पीक इसी राज्य में विक्टोरिया न्यान्ज़ा के उत्तरी किनारे को देखता देखता आगे बढ़ गया। यहाँ से वह दक्षिण की ओर लौटा। यहाँ उसने रिपन प्रपात के पानी को १२० फीट की ऊँचाई से गिरते देखा। यह बहुत ही सुन्दर दृश्य था। मछलियाँ, मगर और दरियाई घोड़े (हिपोपोटैमस) इधर-उधर पानी के बाहर सिर निकाले फिर रहे थे। मछली मारनेवाले काँटिया लिये हुए किनारे पर बैठे थे। छोटी छोटी नावें इधर-उधर फिर रही थीं। यह दृश्य देखकर वे लोग नील नदी के मुहाने की ओर नावों में चढ़कर चले, परन्तु वहाँ के राजा ने उनको आगे न बढ़ने दिया। तब नावें छोड़कर वे लोग नदी से बहुत दूर पश्चिम की ओर चले गये। पर विक्टोरिया न्यान्ज़ा के बीच की झील कियोगा का पता न चला। एलबर्ट न्यान्ज़ा के विषय में उन लोगों से यह सुना कि वह बहुत दूर नहीं है, पर वहाँ पहुँच

न सके। इसलिए वे लोग नदी के मुहाने की ओर चले और गोंडाकारो में पहुँचे। यहां पर स्पीक एक और साथी सेमुयेल बेकर और उसकी स्त्री से जा मिला। फिर यहाँ से काहिरा होते हुए सन् १८६३ ई० में वह इंगलैंड पहुँचा। बन्दूक की गोली लगने से सन् १८६४ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

सैमुयेल बेकर का किस्सा यह था कि वह काहिरा से सन् १८६१ ई० में अपनी पत्नी के साथ, स्पीक से मिलने के लिए, चला और थोड़ा सी अरबी भाषा सीखकर बर्बर तक पहुँचा। वहाँ से एटबरा नदी में होते हुए एबीसीनिया में गया और नील की नीला शाखा के रास्ते खारतूम पहुँचा। फिर श्वेत नील के रास्ते गोंडाकारो में स्पीक से मिला। इसने स्पीक से एलबर्ट न्यान्जा का नाम सुनकर वहाँ जाने की ठान ली। मार्ग दुर्गम था। इसके साथियों ने भी इसको धोखा दिया। इस प्रान्त के राजा ने भी पहले-पहल ठीक रास्ता नहीं बताया। अन्त में थककर से एक बन्दूक लेकर उसने राह बता दी। सन् १८६४ ई० में बेकर ने एलबर्ट झील का पता लगाया और मर्चिसन प्रपात तक नाव खेते हुए पहुँचा। अब यह वापस चला और मुसीबतें झेलकर गोंडोकारो पहुँचा। फिर वहाँ से खारतूम और सौकिन के रास्ते, जो लाल सागर के किनारे पर स्थित है, सन् १८६५ ई० में यह विलायत पहुँचा

लोग बीमार पड गये, कुछ भाग गये और कुछ मर गये। स्पीक भी बीमारी से बहुत दुबला हो गया। फिर भी चलते चलते ये लोग करेन में पहुँचे। यहाँ के राजा ने उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। सन् १८६२ ई० में स्पीक सुन्दर युगांडा प्रदेश में पहुचा। यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा है। फल अधिक उत्पन्न होता है। यहाँ मकानों में सफाई अधिक है। यहाँ के निवासी अपने राजा को सबसे अधिक शक्तिशाली मानते थे।

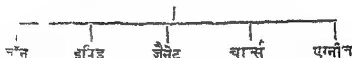
अभी तक नील नदी का पता नहीं चला था और स्पीक इसी खोज में विक्टोरिया न्याञ्जा के उत्तरी किनारे को देखता देखता आगे बढ गया। वहाँ से वह दक्षिण की ओर लौटा। यहाँ उसने रिपन प्रपात के पानी को १२० फीट की ऊँचाई से गिरते देखा। यह बहुत ही सुन्दर दृश्य था। मछलियाँ, मगर और दरियाई घोडे (हिपोपोटेमस) इधर-उधर पानी के बाहर सिर निकाले फिर रहे थे। मछली मारनेवाले कँटिया लिये हुए किनारे पर बैठे थे। छोटी छोटी नावें इधर-उधर फिर रही थीं। यह दृश्य देखकर वे लोग नील नदी के मुहाने की ओर नावों में चढकर चले, परन्तु वहाँ के राजा ने उनको आगे न बढने दिया। तब नावें छोडकर वे लोग नदी से बहुत दूर पश्चिम की ओर चले गये। पर विक्टोरिया न्याञ्जा के बीच का झील कियोगा का पता न चला। एलबर्ट न्याञ्जा के विषय में उन लोगों से यह सुना कि वह बहुत दूर नहीं है, पर वहाँ पहुँच

रॉबर्ट मुफेट ईसाई पादरी था। यह धर्म-प्रचार के लिए यहाँ आया था। इसने देखा लोगों के साथ रहने से उनकी भाषा और आचार-व्यवहार भी सीख लिया था। खोज के कार्य में इसने लिविंग्स्टन की बहुत सहायता की। पर लिविंग्स्टन बचुआना लोगों की भाषा सीखने की इच्छा से बहुत दिनों तक उत्तमाशा अन्तरीप में रहा। फिर उन लोगों को अपने वश में करके आप ईसाई धर्म के प्रचार-कार्य में लगा रहा। यह जब भाषा सीख चुका तो ये लोग इसका बहुत आदर करने लगे। सन १८४६ ई० में रवाना होकर इसने नगामी झील का पता लगाया। मॅबोत्सा में इसको एक सिंह ने घायल कर दिया। पर यह उत्तर की ओर बढ़ता ही गया। यहाँ के शासक ने सबको मिलकर रहने की जगह दे दी। लिविंग्स्टन यहाँ हर प्रकार के काम करने लगा। कभी तो यह लड़कों को पढ़ाता, कभी व्याख्यान देता और कभी दवा बाँटता था।

यहाँ के डच निवासियों को बुअर कहते हैं। उन लोगों ने लिविंग्स्टन को बहुत दुःख दिया। सन् १८४९ ई० में यह अपने साथ कुछ मनुष्यों को लेकर कलहारी रेगिस्तान की ओर चला। कहा जाता था कि कलहारी में एक झील है। लिविंग्स्टन महीने भर तक उसे ढूँढता रहा, पर इसको एक बूँद भी पानी न मिला। अन्त में यह नगामी झील के पास पहुँचा और वहाँ से वापस आया।

डेविड लिविंग्स्टन

जन्म स्थान—लैनशायर, सन् १८१३ ई०,
मृत्यु स्थान—लाला, सन् १८७३ ई०



डेविड लिविंग्स्टन छोटी उम्र में एक रुई के कारखाने में काम किया करता था। इसने इतना धन इकट्ठा कर लिया था कि डाक्टरी पढ़ने के लिए यह ग्लासगो चला गया। फिर सन् १८४० ई० में, डाक्टरी पास कर लेने पर, लंदन मिशनरी सोसाइटी ने इसको अपना कर्मचारी नियुक्त कर लिया। इस चीन जाने की प्रबल इच्छा थी, पर उसी समय अँगरेजों और चीनियों में लड़ाई छिड़ गई थी इसलिए यह वहाँ न जा सका। २० नवंबर सन् १८४० में यह अफ्रिका की ओर चल दिया और अलगोआ की खाड़ी में उतरा। यहाँ इसने रॉबर्ट मुफेट की लड़की से विवाह कर लिया। इस सम्बन्ध के कारण डविड लिविंग्स्टन को देशों में जाने में बहुत सहायता मिली।

रॉबर्ट मुर्फट ईसाई पादरी था। यह धर्म-प्रचार के लिए यहाँ आया था। इसने देशी लोगों के साथ रहने से उनकी भाषा और आचार-व्यवहार भी सीख लिया था। खोज के कार्य में इसने लिविंगस्टन की बहुत सहायता की। पर लिविंगस्टन बेचुआना लोगों की भाषा सीखने की इच्छा से बहुत दिनों तक उत्तमाशा अन्तरीप में रहा। फिर उन लोगों को अपने वश में करके आप ईसाई धर्म के प्रचार-कार्य में लगा रहा। यह जब भाषा सीख चुका तो ये लोग इसका बहुत आदर करने लगे। सन १८४९ ई० में रवाना होकर इसने नगामी झील का पता लगाया। मैबोत्सा में इसको एक सिंह ने घायल कर दिया। पर यह उत्तर की ओर बढ़ता ही गया। यहाँ के शासक ने सबको मिलकर रहने की जगह दे दी। लिविंगस्टन यहाँ हर प्रकार के काम करने लगा। कभी तो यह लड़कों को पढ़ाता, कभी व्याख्यान देता और कभी दवा बाँटता था।

यहाँ के डच निवासियों को बुअर कहते हैं। उन लोगों ने लिविंगस्टन को बहुत दुख दिया। सन् १८४९ ई० में यह अपने साथ कुछ मनुष्यों को लेकर कलहारी रेगिस्तान की ओर चला। कहा जाता था कि कलहारी में एक झील है। लिविंगस्टन महीने भर तक उसे ढूँढ़ता रहा, पर इसको एक बूँद भी पानी न मिला। अन्त में यह नगामी झील के पास पहुँचा और वहाँ से वापस आया।

सन् १८५१ ई० में यह मकालोलो लोगों के राजा के पास गया। यह देश बहुत ही उपजाऊ था। यहाँ बहुत नदियाँ भी थीं। एक वर्ष से कुछ ही अधिक दिनों तक यह अफ्रिका के पार करने में लगा रहा और बहुत कष्ट उठाने के पश्चात् सेंट पॉल में पहुँचा। नकशे में देखो सेंट पॉल कहाँ है। इसी स्थान पर लिविंग्स्टन ने जेम्बिजी नदी को देखा। यहाँ से यह फिर अपनी स्त्री को एक नगर में पहुँचाने गया। उसे पहुँचाकर मकालोलो लोगों के पास वापस आया। फिर इनमें से कुछ को लेकर लौएंडा नगर की ओर चला। लेकिन रास्ते में बीमार पड़ गया, पर चलता ही रहा। इसने रास्ते में शत्रुओं को समझाया। मैजिक लालटेन की तस्वीरें दिखाकर यह उन्हें भुलाता रहा। देश राजाओं ने मार्ग में कर माँगा तो लिविंग्स्टन ने अपना कोट, बटन, छुरा और दुशाला आदि दे दिया। खाना भी चुक गया था और लोग बहुत थक गये थे। अन्त में बहुत समझाने पर लोग समुद्र के किनारे आ पहुँचे। मकोलोलो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने समुद्र को देखते ही सोचा कि पृथ्वी का अन्त आ गया है। लिविंग्स्टन का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। यह चाहता तो वहीं से घर लौट जाता। पर मकालोलो लोगों से यह कह चुका था कि उनको वापस घर पहुँचावेगा इसलिए उनको घर ले जाने की इसने ठान ली। लिनिएँटी नगर मकोलोलो लोगों का मुख्य नगर था। वहाँ पर यह

वापस आया और कुछ दिन ठहरकर वहाँ से पूर्वी समुद्र-तट की ओर चला। इसको पहुँचाने के लिए मक्कालोलो लोगों के राजा सेकिलुयेने जेंबिजी नदी तक आया। फिर इसने एक जल-प्रपात देखा, जिसका नाम विक्टोरिया प्रपात रक्खा। वहाँ के लोग इसको शोगवे कहते थे और अब मोसिआटुनिया कहते हैं। इस जल-प्रपात के अति निकट से भी यह नहीं कहा जा सकता था कि जल-धारा किधर को है। आस-पास चारों ओर जल के कणों से कुहरा सा छा जाता है, मानों भाप के स्तम्भ खड़े हों। बहुत सावधानी से देखने पर ज्ञात हुआ कि नदी २८०० फीट चौड़ी है। नीचे गिरते ही वह १५ या २० गज के एक तङ्ग रास्ते से बहने लगती है। अब नदी के रास्ते ये लोग आगे बढ़े और किलीमेनी पहुँचे। सन् १८५७ ई० में लिविंग्स्टन इंगलैंड गया। वहाँ पर यह पूर्वी अफ्रिका का कौंसल बना दिया गया।

दो वर्ष पश्चात् लिविंग्स्टन, कुछ मनुष्यों और एक जहाज के साथ, किलीमेनी में आया। वहाँ एक छोटे जहाज पर बैठकर इसने जेंबिजी के नीचे के हिस्से को देखा और शायर नदी की भी परीक्षा की। इसी समय शिरवा झील का भी पता लगा। कुछ दिनों के पश्चात् न्यासा झील को देखा। इधर, पुर्तगालवाले लिविंग्स्टन की खोजों से व्याकुल हो गये थे। उन्होंने ब्रिटिश राजा को यह सन्देश भेजा कि लिविंग्स्टन दक्षिणी अफ्रिका में बहुत अत्याचार करता है। इस पर

लिविंग्स्टन इँगलैंड वापस बुला लिया गया। सन् १८६६ ई० में यह फिर अफ्रिका की ओर चला। अब की बार इसने न्यासा की उत्तरी भूमि की और नील नदी के उद्गम का पता लगाने की ठान ली थी। इसके बहुत से साथी भाग गये, पर यह आगे बढ़ता ही गया और मोएरो झील तथा बंगेलो झील का पता लगा लिया।

उत्तर की ओर चलकर लिविंग्स्टन उजीजी पहुँचा। अब यह बहुत दुर्बल हो गया था। एक बार फिर यह कांगो नदी की शाखा लोआलाबा नदी की ओर चला और सन् १८७१ ई० में इस धारा के निकट पहुँच गया। यहाँ पर हबशी बेचे जाते और मोल लिये जाते थे। जब यह उजीजी वापस आया तब इसकी सम्पूर्ण भोज्य-सामग्री चुक गई थी। पर सौभाग्य से हेनरी मार्टन स्टेनली (इसके बारे में तुम अगले किस्से में पढ़ोगे) कुछ खाद्य पदार्थ के साथ आ गया। इससे लिविंग्स्टन के प्राण में प्राण आये, पर दोनों में कुछ अनबन हो गई। इससे वह लिविंग्स्टन को अकेला छोड़कर पूर्वी समुद्र-तट पर जा पहुँचा। स्टैनली और लिविंग्स्टन ने अच्छी तरह से इस बात की जाँच कर ली थी कि टँगनिका के उत्तरी किनारे से नील नदी ही निकलती है। स्टैनली के चले जाने के बाद लिविंग्स्टन ने अकले ही बंगेला की ओर यात्रा की। ८ महीने के पश्चात् यह बंगेला के दक्षिणी किनारे इलाला नगर में पहुँचा। इस समय यह बहुत थक गया था। १ मई

सन् १८७३ ई० में इसकी मृत्यु हो गई। इसके दोनों साथियों ने इसके मृत शरीर को आठ महीने तक ले चलकर समुद्र-किनारे पर पहुँचाया, जहाँ से वह विलायत भेज दिया गया। वेस्ट मिनिस्टर के गिर्जे में बड़ा धूमधाम के साथ इसका शव गाड़ दिया गया।

हेनरी मार्टन स्टेनली

जन्म—सन् १८४० ई०, मृत्यु—सन् १९०४ ई०

हेनरी मार्टन स्टेनली का असली नाम जॉन रॉलैंड है। वह बहुत ही निर्धन था। डेनबिग के निकट उसका जन्म हुआ था। १३ वर्ष की अवस्था तक सेंट आसफ के दरिद्राश्रम में उसको शिक्षा मिली। फिर इस आश्रम को छोड़कर एक वर्ष तक उसने शिक्षक का काम किया। इसके पश्चात् एक जहाज में नौकर होकर वह न्यू आरलियंस पहुँचा। वहाँ के एक सौदागर का वह कृपा-पात्र हो गया। इस सौदागर का नाम स्टेनली था। उस सौदागर के कोई लड़का न था, इससे उसने रोलैंड को गोद ले लिया। लेकिन स्टेनली न तो अधिक दिनों तक जीवित रहा और न इस लड़के के नाम कुछ लिख ही पाया। इससे स्टेनली के मर जाने पर रालैंड को कुछ न मिला। गोद लेनेवाले पिता के नाम से ही वह प्रसिद्ध रहा।

अब हेनरी को सेना में नौकरी करनी पड़ी। वह एक छोटा अफसर हो गया। नौकरी छोड़कर वह तुर्किस्तान चला गया। वहाँ से फिर अमेरिका पहुँचा। अमेरिका में

वापस आने पर वह 'न्यूयार्क हेरल्ड' समाचार-पत्र का संवाददाता नियुक्त हुआ।

सन् १८६९ ई० में वह लिविंग्स्टन की खोज में भेजा गया। यह तुम पीछे पढ़ ही चुके हो। सन् १८७२ ई० में लिविंग्स्टन का पता लगाकर वह इँगलिस्तान लौट गया। वहाँ उसने अपने अफ्रिका-दर्शन की अद्भुत कहानियाँ सुनाईं। महारानी विक्टोरिया ने सन्तुष्ट होकर उसको एक सोने की सुँघनीदानी दी। रायल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ने भी उसको एक स्वर्ण पदक दिया। 'डेली टेलीग्राफ' और 'न्यूयार्क हेरल्ड' के सम्पादकों ने उसको तीन वर्ष के बाद, सन् १८७४ ई० में, लिविंग्स्टन के अधूरे काम को पूरा करने के लिए भेजा।

हेनरी मार्टन स्टैनली का यह पता लगाना था कि विक्टोरिया न्यान्ज़ा और टैंगनिका झील में कोई सम्बन्ध है या नहीं। तीन अँगरेजों के साथ रवाना होकर वह जंजीबार में पहुँचा। उसने ४० फीट लम्बी किश्ती अपने साथ ले ली। इसके ८ टुकड़े किये जा सकते थे और इन टुकड़ों को पीठ पर लादकर भी ले जा सकते थे। जंजीबार से ३०० देशी आदमियों को साथ लेकर वह रवाना हुआ, पर रास्ते में इनमें से कुछ बीमार पड़ गये, कुछ मर गये, कुछ भाग गये और कुछ को देशी लोगों ने मार डाला। लगभग १०० मनुष्यों के साथ वह युगोगो नगर से उत्तर-पश्चिम की ओर

चल दिया। वे लोग एक नवीन, सुन्दर और विस्तृत देश में पहुँचे। घास के एम मैदान दिखाई पड़े जिनमें पेड़ों का नाम न था। गाय बैल, भेड़ और बकरियाँ चरती दिखाई पड़ता था। यह प्रदेश विक्टोरिया न्याञ्जा के दक्षिण में है। क्या तुम बता सकते हो कि इस प्रान्त में पेड़ क्यों न थे। क्या एशिया में भी कोई ऐसा स्थान है? अन्त में चलते चलते स्टैनली के एक साथी ने विक्टोरिया न्याञ्जा को देखा। रमीक की खाड़ी को पार करके स्टैनली विक्टोरिया न्याञ्जा में अपनी किश्ती लेकर पहुँचा। यहाँ उसने बहुत से दरियाई घोड़े देखे। तेज आँधी चल रही थी। बिजली चमक रही थी। स्टैनली के साथी घबरा उठे। रिपन जल-प्रपात को पार करता हुआ वह विक्टोरिया न्याञ्जा में पहुँचा और वहाँ से यूगांडा आया। यूगांडा के राजा ने स्टैनली की बड़ी आवभगत की और उससे बहुत से प्रश्न किये। अब वह वापस चला। पर उसका एक अँगरेज साथी मर गया। स्वयं स्टैनली भी बीमार हो गया।

यूगांडा का राजा मुसलमान नहीं होना चाहता था पर अँगरेजों का इतना चाहता था कि उनका धर्म स्वीकार करने को लिए प्रस्तुत हो गया। उसने स्टैनली की सहायता करना स्वीकार कर लिया। यूगांडा से पश्चिम ओर चलकर स्टैनली ने एलबर्ट न्याञ्जा और एडवर्ड न्याञ्जा का पता लगाया। इसके पश्चात् वह उजीजी गया। वहाँ से उसने किश्ती में तमाम झील का चक्कर काटा। उसने अब अच्छी तरह से पता लगा लिया कि

विक्टोरिया न्याञ्जा के साथ टैंगनिका का कोई सम्बन्ध नहीं है। स्टेनली को पश्चिम की ओर चलने पर लुआलेबा नदी दृष्टिगोचर हुई। लुआलेबा के रास्ते चलते चलते वह नियांग्वे पहुँचा। यहाँ उसको एक अरबी मिला। इसने अपने २०० मनुष्यों के साथ सहायता करने का वचन दिया।

स्टेनली अब घने वनों में से होता हुआ चला। इन वनों में रहनेवाले मनुष्य बहुत ही छोटे कद के थे। ऊँचाई में ये प्राय गज भर के थे। इनका सिर बहुत बड़ा और दाढ़ी बहुत लम्बी थी। ये छोटी छोटी झोपड़ियों में रहते थे। झोपड़ियाँ केले के पत्तों की बनी थीं। उनके निकट दो-एक बकरियाँ भी बँधी हुई थीं। जङ्गलों में बन्दर बहुत थे। हिंस्र जन्तुओं में चीते इतने अधिक थे कि थोड़ी थोड़ी दूर चलने के पश्चात् ही दो एक अवश्य दिखाई पड़ते थे। साँप असंख्य थे। धूप अच्छी तरह नीचे नहीं पहुँचती थी और पेड़ों से पानी की बूँदे टपकती थीं। नीची भूमि में कीचड़ ही कीचड़ था। कहीं कहीं रास्ते में पानी इतना इकट्ठा हो जाता था कि चलते समय दूसरों पर छिटककर पड़ता था। अब उन्होंने जलमार्ग से आगे बढ़ने के लिए नदी में किश्ती डाली। कुछ लोग तो किश्ती में बैठ गये और कुछ पैदल चले। रास्ते में दुश्मन लोगों ने आक्रमण किया। बचते बचाते वे लोग उस जल-प्रपात के निकट पहुँचे जो अब स्टेनली के नाम से प्रसिद्ध है। कुल सात झरने मिले

निकलने पार करने में ८७ दिन लग गये। इन प्रपातों के पास के द्वीपों में कुछ नर-भक्षक रहते थे। इन्होंने कई बार आक्रमण किया। आगे बढ़ते बढ़ते ये यात्री एक स्थान में आ पहुँचे जहाँ नदी का पानी फैला हुआ था। इस स्थान का नाम स्टैनली पूल रक्खा गया। इसके आगे फिर झरने मिले और स्टैनली मनुष्यों पर किश्तियाँ लादकर आगे बढ़ा। इसका तीसरा अँगरेज साथी यहीं मर गया। स्टैनली जब समुद्र से पाँच मील के पास पहुँचा तो उसने नदी के मुहाने तक पैदल पहुँचना चाहा। अन्त में वह समुद्र के किनारे वाले नगर में पहुँच गया। वास्तव में उसी ने कांगो नदी का ठीक ठीक पता लगाया। इस समय से यहाँ की मुख्य वस्तुएँ—रबर और हाथी-दाँत इत्यादि—भिन्न भिन्न देशों में भेजी जाने लगीं।

सन् १८९५ से १९०० ई० तक हेनरी मार्टन स्टैनली पार्लियामेंट का सदस्य रहा। सन् १९०४ ई० में उसकी मृत्यु हुई। उसने अपनी जीवनी बड़ी ललित भाषा में लिखी है।



ऐबिल जैंसन टैस्मन

जन्म-स्थान—हर्न, लगभग सन् १६०० ई०, मृत्यु—लगभग सन् १६४४ ई०

लोगों ने बहुत पुराने समय से यह सुना था कि ध्रुव दक्षिण में एक महाद्वीप है। पर उसके पता लगाने का विचार किसी को बहुत दिनों तक नहीं हुआ। पुर्तगाल-वालों और स्पेनवालों ने इधर-उधर के देशों का पता लगाया था, पर बहुत दक्षिण में वे भी नहीं गये थे। एशिया के पूर्वी द्वीप-समूह में ये लोग आये हुए थे और व्यापार का काम बढा हुआ था। किन्तु स्पेनवालों ने निरे व्यापार के निमित्त ज्हाज का काम नहीं किया था, उनकी इच्छा तो नये देशों को ढूँढ निकालने की थी। उन्होंने सन् १५९५ ई० में मारकिज़ा द्वीप और न्यू हेब्रडीज का पता लगाया। जो लोग वापस आये उन्होंने दक्षिणी महाद्वीप के बारे में बड़े अद्भुत क़िस्से सुनाये। इनमें से डी कीरास मुख्य था। यह सन् १६०५ ई० में टारस के साथ दक्षिणी महाद्वीप का पता लगाने को रवाना हुआ। यह हेब्रडीज के बड़े द्वीप का पता लगाकर वहाँ से वापस लौट आया। इसने टारेस को दूसरी जगह छोड दिया था और उसी ने पहले पहल आस्ट्रे

लिया और न्यू गिनी के बीच के रास्ते का पता लगाया। यह रास्ता अब उसी के नाम से प्रसिद्ध है। इसको टारेस जल-संयोजक कहते हैं।

पूर्वी द्वीप-समूह में अब पुर्तगालवालों की शक्ति बढ़ गई। इन्होंने डच लोगों के बहुत से द्वीप ले लिये और टेरा आस्ट्रेलिया या दक्षिणी महाद्वीप का पता लगाना आरम्भ किया। सन् १५६८ ई० में एक डच ने आस्ट्रेलिया के विषय में लिखा है—"यह सबसे दक्षिण की भूमि है। टारस जल संयोजक इसको न्यू गिनी से अलग करता है। यह इतना बड़ा है कि इसको पञ्चम महाद्वीप कह सकते हैं।" सन् १६०६ ई० से सन् १६३० ई० तक डच लोगों ने इसके बहुत से हिस्से का पता लगाया था—जैसे लिवीन अन्तरीप, हार्टाग द्वीप और कारपेंटरिया। पर इनमें सबसे प्रसिद्ध एबिल टैसमन है। सन् १६४२ ई० में यह बटेविया भेजा गया। यहाँ से यह मारिशस की ओर चला और फिर वहाँ से दक्षिण पूर्व की ओर चलते चलते टसमानिया में पहुँचा। इस द्वीप का नाम इसने वैनडीमसलैंड रक्खा। पर आजकल यह टसमानिया के नाम से ही प्रसिद्ध है। इसको यह पता नहीं था कि यह द्वीप है। यह पूर्व की ओर चला और न्यूज़ीलैंड के दक्षिणी द्वीप में पहुँचा, किन्तु यहाँ उतर न सका। यहाँ के मनुष्य बहुत ही जङ्गली थे। यहाँ से यह उत्तर-पूर्व की ओर चला और फ्रेंडली द्वीप पुञ्ज में पहुँचा।

वहाँ से बटेविया वापस आया। सन् १६४४ ई० में यह फिर रवाना हुआ और इसने आस्ट्रेलिया के उत्तरी हिस्से का पता लगाया। यह टारस जल-संयोजक को पार नहीं कर पाया था कि इसका देहान्त हो गया।

विलियम डैंपियर

जन्म—सन् १६५२ ई०, मृत्यु—लगभग सन् १७१५ ई०

डैंपियर एक अँगरेज नाविक था। बचपन में ही बाप के मर जाने से यह नाविक का कार्य सीखने लगा। इसने सन् १६८८ ई० में आस्ट्रेलिया के उत्तरी पश्चिमी हिस्से का पता लगाया। यह आस्ट्रेलिया के उत्तरी हिस्से के बारे में लिखता है—"यहाँ के निवासी बहुत ही दरिद्र हैं। समुद्र से थोड़ी ही दूर पर रेत की छोटी छोटी पहाड़ियाँ बनी हैं, और इनके पीछे देश के अन्दर जङ्गल हैं। कहा पानी नहीं दिखाई पड़ता। कुआँ खोदने पर ही पानी मिलता है।" घर वापस जाकर इसने ऐसे अद्भुत किस्से सुनाये कि १६९९ ई० में यह एक जहाज लेकर दुबारा आस्ट्रेलिया की खोज के लिए भेजा गया। उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते से यह शार्क की खाड़ी में पहुँचा। यहाँ से उत्तर-पूर्व की ओर चला। यह भूमि रेतीली थी, पर यहाँ बहुत ही सुन्दर फूल खिले हुए थे। इस बहुत दिनों तक पैदल चलना पड़ा। रास्ते में इसका भोजन सामग्री घट गई। बहुत दिनों के पश्चात् यह टाइमर द्वीप में पहुँचा। न्यू गिनी के उत्तरी हिस्से को देखता हुआ यह बटेविया गया। वहाँ से इँगलैंड लौट गया। रास्ते में इसका जहाज एसेन्शन द्वीप में डूब गया, परन्तु भाग्यवश यह बच गया। सन् १७१५ ई० के लगभग, इसी समुद्री यात्रा में, इसका देहान्त हुआ।

जेम्स कुक

जन्म—सन् १७२८ ई०, मृत्यु- सन् १७७९ ई०

जेम्स कुक का जन्म यार्कशायर के मार्टन नगर में हुआ था। बचपन में इसने एक दुकान में नौकरी कर ली थी। वहाँ से यह व्हिटबी नगर में गया। वहाँ किसी जहाज के सौदागर के यहाँ नौकर हो गया। बचपन से ही इसकी इच्छा नाविक बनने की थी। सन् १७५५ ई० में जब अमेरिका में फ्रांसीसियों से अँगरेजों की लड़ाई छिड़ी तो इसने भी फौज में नाम लिखा लिया। यहाँ इसने ऐसा अच्छा काम किया कि यह १७६४ ई० में अमेरिका के उत्तर-पूर्वी समुद्र तट की देख-भाल के कार्य में नियुक्त किया गया।

सन् १७६८ ई० में आकाश-विज्ञान की उन्नति के लिए कुक ताहिति द्वीप में गया। यहाँ के राजा तुतहा ने इसका नाम तुत रखकर मैत्री कर ली। ताहिति लोग चोर थे इससे कुक को बड़ी सावधानी से रहना पड़ा। यहाँ से यह आगे बढ़ा और न्यूजीलैंड के पूर्वी तट पर ७ अक्टूबर सन् १७६९ ई० में पहुँचा। जिस स्थान पर यह पहुँचा था वहाँ की दरिद्रता को देखकर इसने उसका नाम पावर्टी (दरिद्रता) की

यहाँ के मनुष्य भावरियों ने इसको उतरने न दिया। ये लोग वीर थे और शत्रुओं को मारकर खा जाते थे। इसी लिए उत्तर को आगे चलकर इसने किनारे किनारे उत्तरी तथा दक्षिणी द्वीप की परिक्रमा कर डाला। इन दोनों द्वीपों के मध्य के जल-संयोजक का नाम कुक का जल-संयोजक रक्खा। इस देश को इसने फलों को उपज के लिए अच्छा समझा। क्या तुम बता सकते हो कि यहाँ कौन कौन से फल उत्पन्न हो सकते हैं और क्यों। रूम सागर का जल वायु कैसा होता है? न्यूजीलैंड के उत्तरी द्वीप का जल वायु भी ऐसे ही फलों के उपयुक्त है।

दक्षिणी द्वीप की परिक्रमा के पश्चात् कुक आस्ट्रेलिया के हाऊ अन्तरीप की ओर चला। इसी के निकट पोर्ट जैक्सन बड़ा सुन्दर बन्दरगाह है। इसको छोड़कर यह उत्तर की ओर बढ़ा। ग्रेट बैरियर रीफ और आस्ट्रेलिया के समुद्र-तट के बीच की राह से यह धीरे धीरे बढ़ता गया। लेकिन ट्रिब्यूलेशन अन्तरीप के निकट डूबे हुए मूँगों की नुकीली चोटियों से टकराकर, इसका जहाज डूबने लगा परन्तु इसने बड़ा सावधानी से उसे बचा लिया। यहाँ पर छोटे छोटे काले मनुष्य दिखाई पड़े। ये लोग नङ्ग-धड़ङ्ग थे और नाक के बीच में लकड़ी डाले रहते थे जिससे बहुत भयङ्कर प्रतीत होते थे, पर वास्तव में न थे डरपोक।

अब गर्मी बढ़ने लगी और हर तरह के रेंगने के कीड़े, मच्छर और चींटे दिखाई पड़े। अब तक जहाज की मरम्मत

होवी रही तब तक कुक ने न्यूहालैंड की भूमि के बारे में बहुत सा छानबीन की। जहाँ पर जहाज टूटा था उस स्थान को ट्रिब्यूलेशन अन्तरीप कहते हैं। इस स्थान में कुक को बहुत सी गोभी और फलें मिलें। एक विचित्र पशु भी दृष्टिगोचर हुआ जो कुदक कुदककर चलता था। उसकी माता अपने बच्चे को पेट के थैले में बैठाकर भागती थी। वह बकरियों की भाँति घास खाती थी। इस पशु को "कंगारू" कहते हैं। यहाँ के निवासी दक्षिण भाग के निवासियों की अपेक्षा दयालु होते हैं। ये शरीर को विचित्र रङ्ग से रँगते हैं। इनके बाल न तो खड़े होते हैं या घुँघराले।

जहाज की मरम्मत हो जाने पर ये लोग फिर चल पड़े। समुद्र तो यहाँ शान्त था पर चट्टानों से टकराकर जहाज के टूटने का भय भी बहुत था। चलते चलते ये लोग यार्क अन्तरीप में पहुँचे। यार्क अन्तरीप के एक द्वीप पर उतरकर कुक ने अँगरेजी झण्डा गाड़ दिया। यहाँ से यह जावा की ओर चल पड़ा और वहाँ से अपने जहाज की अच्छी तरह मरम्मत करवाकर सन् १७७१ ई० में उत्तमाशा अन्तरीप के मार्ग से इँगलैंड पहुँचा।

दूसरी बार यह सन् १७७२ ई० में रवाना हुआ। सन् १७७३ ई० में इसने दक्षिण ध्रुव वृत्त को पार किया, फिर पूर्व की ओर चलते चलते न्यूजीलैंड पहुँचा। सर्दी यहाँ बहुत थी। समुद्र में बर्फ के बड़े बड़े टोके तैर रहे थे, जिनके चारों ओर कुहरा छाया हुआ था। कहीं कहीं जलस्तम्भ भी

बड़े भयानक रूप में दिखाई पड़े। सबको विश्वास हो गया कि दक्षिणी महाद्वीप का किनारा आ गया। इसी समय नारफॉक द्वीप समूह और न्यू कैलेडोनियन का पता चला। यहाँ से इसने अन्तरीप के रास्ते यह लौट चला।

सन् १७७६ ई० में तीसरी बार यह रवाना हुआ और हवाई द्वीप में पहुँचा। यहाँ से यह पुनः उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट की ओर चला और तट से अपने जहाज का बहुत दूर न रखते हुए अलास्का की ओर रवाना हुआ। फिर बेरिङ्ग जल-संयोजक का इसने पार किया। पहले-पहल इसी ने प्रमाणित किया कि एशिया और अमेरिका भिन्न भिन्न महाद्वीप हैं। अधिक उत्तर की ओर जाना सम्भव न था, क्योंकि बर्फ पड़ रही थी और समुद्र जम रहा था। इससे इसको वापस आना पड़ा। सन् १७७८ ई० में यह हवाई द्वीप में पहुँचा। यहाँ इसकी बड़ी आवभगत हुई। पर जब इसने यहाँ के लोगों पर चोरी का दोष लगाया तो वे बहुत ही असन्तुष्ट हुए। कुक के आदमियों ने जब उन पर गोली चलाई तो वे कुक पर टूट पड़े और उन्होंने इसको सन् १७७९ ई० में मार डाला। इसकी विधवा स्त्री और बच्चे को सरकार ने पेंशन दी और रायल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ने इसके स्मारक स्वरूप, इसके नाम से, एक सुवर्ण-पदक रक्खा।

मैथ्यू फ्लिंडर्स

जन्म—सन् १७७४ ई०, मृत्यु—सन् १८१४ ई०

मैथ्यू फ्लिंडर्स अँगरेज नाविक था। इसका जन्म लिंकनशायर में हुआ। सन् १७९५ ई० में फ्लिंडर्स आस्ट्रेलिया गया। सन् १७९८ ई० में यह जार्ज बास के साथ हो लिया और टैस्मानिया की प्रदक्षिणा करने लगा। वहाँ से लौटकर इसने क्वींसलैंड के पता लगाने का कार्य आरम्भ किया। सन् १८०१ ई० में यह विलायत को लौट गया। वहाँ से यह फिर रवाना हुआ और उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते लीविन पहुँचा। वहाँ से पूर्व-दक्षिण की ओर चलकर किंग जार्ज़्स द्वीप में पहुँचा। यहाँ अपने जहाज की मरम्मत कराकर यह ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। कैटूसट्राफी अन्तरीप के निकट इसके कुछ साथी डूब गये। यहाँ से यह स्पेंसर की खाड़ी में गया। इसने समझा कि आस्ट्रेलिया का पूर्वी किनारा यहाँ से आरम्भ होता है। पर इसके भीतर प्रवेश करने से पता लग गया कि यह तो खाड़ी है। किनारे पर उतरकर इसने फ्लिंडर्स रेंज का पता लगाया। यहाँ से यह समुद्र में वापस आया। इस खाड़ी के मुहाने पर इसे एक द्वीप मिला। इस द्वीप में बहुत से कंगारू मिले। इन्हीं के नाम से इसने इस द्वीप को प्रसिद्ध कर दिया।

आगे बढ़कर इसको सट विंसेंट की खाड़ी मिली। किनारे पर बहुत से पेड़ दिखाई पड़े। ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के उत्तर में पेड़ दिखाई नहीं पड़ते थे। पूर्व की ओर चलकर इसको फ्रांसीसियों का एक जहाज मिला। फ्लिंडर्स ने इस खाड़ी का नाम एनकाउंटर रक्खा। यहाँ से पोर्ट फ़िलिप में पहुँचा और बास जल-संयोजक होते हुए पोर्ट जैक्सन में गया। सन् १८०२ ई० के जुलाई में यह उत्तर की ओर चला। फिर आस्ट्रेलिया और मूँगे के द्वीप के बीच की राह का देख कर ग्रेट बैरियर रीफ के पूर्व से टारेस जल संयोजक में आया। यहाँ से यह कारपेंटरिया की खाड़ी में गया। यहाँ समुद्र छिछला था, भूमि बराबर था। परन्तु स्थल पर उतरने का इसका साहस मरा हुआ। इधर इसके जहाज की यह दशा थी कि आगे बढ़ना असम्भव था। फिर भी १०५ दिन की यात्रा के पश्चात् यह आर्नहेम अन्तरीप होता हुआ मेलविल की खाड़ी में पहुँचा और वहाँ से आर्नहेम की खाड़ी में गया। यहाँ पर फ्लिंडर्स को कुछ चीनी लोग मिले जो मछली पकड़ने आये थे।

फ्लिंडर्स अब इँगलैंड की ओर चल दिया। रास्ते में मारिशस द्वीप के निकट इसे फ्रांसीसियों ने कैद कर लिया। यह छ महीने तक वहीं रहा। इसने एक पुस्तक लिखी है। इसी पुस्तक में टेरा आस्ट्रेलिस का नाम बदलकर आस्ट्रेलिया रक्खा है। सन् १८१४ ई० में इसका देहान्त हो गया।

चार्ल्स स्टर्ट

जन्म—सन् १७९५ ई०; मृत्यु—सन् १८६९ ई०

आस्ट्रेलिया के भीतरी प्रदेश के पता लगाये जाने का काम २५ वर्ष तक बन्द रहा। अब अँगरेज प्राय: पूर्वी समुद्र-तट की भूमि में ही बसने लगे थे। अधिकतर देश का ठीक ठीक पता न लगने से इँगलैंड के निर्वासित कैदी ही यहाँ भेजे जाते थे। देश के भीतर प्रवेश न करने का यह भी कारण था कि तट-भूमि के पश्चिमी किनारे पर एक ऊँची पहाड़ी थी जिसकी तलहटी में जङ्गल थे। इस पहाड़ी का पार करना असम्भव प्रतीत होता था। पर सन् १८१३ ई० में एक किसान ने पहाड़ी के शिखर से पश्चिमी उपजाऊ भूमि का पता लगाया। अब लोगों ने इस पहाड़ी का पार करना आरम्भ किया। सन् १८१५ ई० में इवँस ने लैचलन नदी का पता लगाया और बैथर्स्ट के मैदान दृष्टिगोचर हुए। मास्करी नदी का भी पता लग गया। जब लोगों ने सुना कि नदियाँ पश्चिम की ओर जाती हैं तो उनको इस महाद्वीप के पश्चिमी किनारे के भी मिल जाने की आशा हुई।

सन् १८१७ ई० में आॅक्सले को खोज का कार्य सौंपा गया। उसने इन नदियों के बारे में थोड़ा बहुत

और लौटते समय लिवरपूल के मैदान का भी देखा। कुछ दिनों में मरबजा नदी का पता लगा। सन् १८२४ ई० में ह्यूम और हॉवेल ने मरे नदी का पता लगाया। आस्ट्रेलियन आल्पस् के बीच में एक दर्रा मिला, इससे वे पोर्ट फिलिप में जा पहुँचे। सन् १८२८ ई० में स्टर्ट ने भी यह देखना चाहा कि ये सब नदियाँ किसी बड़ी नदी में गिरती हैं या नहीं।

स्टर्ट का जन्म बङ्गाल में, २८ अप्रेल सन् १७९५ ई० में, हुआ था। इसने पल्टन में नाम लिखवाया और सन् १८२५ ई० में यह सिडनी में गया। फिर एक किश्ती लेकर, ७ आदमियों के साथ, यह सन् १८२८ ई० में देश के भीतर रवाना हुआ। ७१ दिन के पश्चात् यह मरबजी नदी के पास पहुँचा। इसके पास अधिक भोज्य-सामग्री न थी और जो कुछ थी वह डूब गई। अन्त में यह मरे नदी में आया। यहाँ पर इसको बहुत से देशी आदमी दिखाई पड़े। वे इसको मारने की चेष्टा कर रहे थे, पर यह आगे बढ़ता ही रहा। अब इसकी किश्ती डारलिंग नदी में आ पहुँची। वहाँ से यह धीरे धीरे आगे बढ़ा और समुद्र निकट आता गया। अन्त में अलेक्जेंड्रिया झील में यह आ पहुँचा। यह झील इतनी छिछली थी कि किश्ती का खेना असम्भव हो गया और इसको लौटना पड़ा। अब एक तो भोजन सामग्री चुक गई थी, दूसरे देशी लोगों का उत्पात भी बढ़ गया था। फिर भी स्टर्ट धैर्य के साथ अपने साथियों को समझाकर आगे बढ़ता रहा।

छः महीने के पश्चात् २००० मील का सफर तय करके स्टर्ट अपने साथियों समेत सिडनी पहुँचा।

स्टर्ट का स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था, इसलिए सरकार ने इसको पेंशन देना स्वीकार किया। जब वह इँगलेंड पहुँचा तो बिलकुल अन्धा हो गया था। सन् १८६९ ई० में इसका देहान्त हो गया।

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०, मृत्यु—सन् १९०१ ई०

अँगरेज लोग आस्ट्रेलिया में एक स्थान के पश्चात् दूसरे स्थान पर अधिकार जमाते रहे। अब उनको ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न देशों से यहाँ के मैदानों में भेड़ बकरी, गाय, बैल और घोड़े लाकर पाले जायँ तो उनके लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है। उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों को मँगवा भी लिया था और उन्हें पालने का काम यहाँ के क़ैदियों से लिया जाता था। पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था। इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों की इच्छा हुई कि घास के और भी मैदानों का पता लगे तो अच्छा हो। इसी निमित्त, खोज के कार्य के लिए कुछ मनुष्यों की आवश्यकता पड़ी। आयर ने इस कार्य को उठा लिया।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म यार्कशायर में हुआ था। सन् १८३३ ई० में यह आस्ट्रेलिया आया था। इसने पहले-पहल भेड़ों की रखवाली का काम करना आरम्भ किया और [illegible] की भी भाषा और आदतों को भी सीख लिया।

सन् १८४० ई० में आयर देश के अन्दर घुस पड़ा। रास्ते में इसको टॉरेंस झील मिला और आसपास भी ऐसी ही अनेक झीलें मिलीं। इसलिए इसने अपना मार्ग बदल दिया। दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर के प्रायद्वीप में पहुँचा, फिर वहाँ से पश्चिम को ओर आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। यह भूमि जलहीन थी। मीलों तक जलाशय दिखाई नहीं पड़ते थे। मार्ग भी बहुत लम्बा था। पहले-पहल यह फाउलर की खाड़ी में पहुँचा। यद्यपि लोगों ने इसको आगे बढ़ने से रोका पर यह आगे बढ़ता ही गया। आँधी बहुत ही वेग से चलने लगी। रेत से आँखें अन्धी होने लगी और छोटे छोटे कीड़ों ने इसको बहुत ही कष्ट दिया। इसके साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया। मारे प्यास के यह घबरा उठा। इसके साथी काले आदमियों ने भी इसे धोखा दिया। उन्होंने आयर के अँगरेज साथी की हत्या करके उसका सामान लूट लिया। पर अब इसने आस्ट्रेलियन बाइट को पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त में पहुँच गया था जहाँ जाड़े के दिनों में वर्षा हो रही थी। इसके पास कपड़े नहीं थे अतएव पानी में भीगकर यह ठिठुरने लगा। सौभाग्य-वश एक फ्रांसीसी जहाज तट के निकट दिखाई दिया। उसी से इसे कुछ खाना और कपड़ा मिला। अब यह और पश्चिम की ओर चला। रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं। इस

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०, मृत्यु—सन् १९०१ ई०

अँगरेज लोग आस्ट्रेलिया में एक स्थान के पश्चात् दूसरे स्थान पर अधिकार जमाते रहे। अब उनको ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न देशों से यहाँ के मैदानों में भेड़, बकरी, गाय, बैल और घोड़े लाकर पाले जायँ तो उनके लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है। उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों को मँगवा भी लिया था और उन्हें पालने का काम यहाँ के कैदियों से लिया जाता था। पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था। इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों को इच्छा हुई कि घास के और भी मैदानों का पता लगे तो अच्छा हो। इसी निमित्त, खोज के कार्य के लिए कुछ मनुष्यों की आवश्यकता पड़ी। आयर ने इस कार्य को उठा लिया।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म यार्कशायर में हुआ था। सन् १८३३ ई० में यह आस्ट्रेलिया आया था। इसने पहले पहल भेड़ों की रखवाली का काम करना आरम्भ किया और देशी लोगों की सी भाषा और आदतों को भी सीख लिया।

सन् १८४० ई० मे आयर देश के अन्दर घुस पड़ा। रास्ते में इसको टारेंस झील मिला और आसपास भी ऐसी ही अनेक झीलें मिलीं। इसलिए इसने अपना मार्ग बदल दिया। दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर के प्रायद्वीप मे पहुँचा, फिर यहाँ से पश्चिम की ओर आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। यह भूमि जलहीन थी। मीलों तक जलाशय दिखाई नहीं पडते थे। मार्ग भी बहुत लम्बा था। पहले-पहल यह फाउलर की खाड़ी मे पहुँचा। यद्यपि लोगों ने इसको आगे बढने से रोका पर यह आगे बढ़ता ही गया। आँधी बहुत ही वेग से चलने लगी। रेत से आँखें अन्धी होने लगी और छोटे छोटे कीडों ने इसको बहुत ही कष्ट दिया। इसके साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया। मारे प्यास के यह घबरा उठा। इसके साथी काले आदमियो ने भी इसे धोखा दिया। उन्होने आयर के अँगरेज साथी की हत्या करके उसका सामान लूट लिया। पर अब इसने आस्ट्रेलियन बाइट को पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त मे पहुँच गया था जहा जाड़े के दिनों में वर्षा हो रही थी। इसके पास कपडे नहीं थे अतएव पानी से भीगकर यह ठिठुरने लगा। सौभाग्य-वश एक फ्रांसीसी जहाज तट के निकट दिखाई दिया। उसी से इसे कुछ खाना और कपड़ा मिला। अब यह और पश्चिम की ओर चला। रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं। इस

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०, मृत्यु—सन् १९०१ ई०

अँगरेज लोग आस्ट्रेलिया में एक स्थान के पश्चात् दूसरे स्थान पर अधिकार जमाते रहे। अब उनको ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न देशों से यहाँ के मैदानों में भेड़, बकरी गाय, बैल और घोड़े लाकर पाले जायँ तो उनके लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है। उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों को मँगवा भी लिया था और उन्हें पालने का काम यहाँ के क़ैदियों से लिया जाता था। पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था। इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों की इच्छा हुई कि घास के और भी मैदानों का पता लगे तो अच्छा हो। इसी निमित्त, खोज के कार्य के लिए, कुछ मनुष्यों की आवश्यकता पड़ी। आयर ने इस कार्य को उठा लिया।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म यार्कशायर में हुआ था। सन् १८३३ ई० में यह आस्ट्रेलिया आया था। इसने पहले पहल भेड़ों की रखवाली का काम करना आरम्भ किया और देशी लोगों की सी भाषा और आदतों को भी सीख लिया।

सन् १८४० ई० में आयर देश के अन्दर घुस पड़ा। रास्ते में इसको टारेन्स झील मिली और आसपास भी ऐसी ही अनेक झीलें मिलीं। इसलिए उसने अपना मार्ग बदल दिया। दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर के प्रायद्वीप में पहुँचा, फिर वहाँ से पश्चिम की ओर आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। यह भूमि जलहीन थी। मीलों तक जलाशय दिखाई नहीं पड़ते थे। मार्ग भी बहुत लम्बा था। पहले-पहल यह फाउलर की खाड़ी में पहुँचा। यद्यपि लोगों ने इसको आगे बढ़ने से रोका पर यह आगे बढ़ता ही गया। आँधी बहुत ही वेग से चलने लगी। रेत से आँखें अन्धी होने लगीं और छोटे छोटे काँटों ने इसको बहुत ही कष्ट दिया। इसके साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया। मारे प्यास के यह घबरा उठा। इसके साथी काले आदमियों ने भी इसे धोखा दिया। उन्होंने आयर के अँगरेज साथी की हत्या करके उसका सामान लूट लिया। पर अब इसने आस्ट्रेलियन बाइट को पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त में पहुँच गया था जहाँ जाड़े के दिनों में वर्षा हो रही थी। इसके पास कपड़े नहीं थे अतएव पानी से भीगकर यह ठिठुरने लगा। सौभाग्य-वश एक फ्रांसीसी जहाज तट के निकट दिखाई दिया। उसी से इसे कुछ खाना और कपड़ा मिला। अब यह और पश्चिम की ओर [illegible]। रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं। [illegible]

नदी का पता बताया। मेकेंजी नदी मुहाने की ओर गहरी हाती जाती थी। उसके किनारे पर खान को ढेर मिलते थे। बगर नदी के सङ्गम-स्थान पर कोयला जलता दिखाई पड़ा। मेकेंजी लिखता है कि यहाँ नुकीले पेड़ दिखाई पड़ते हैं और उत्तर की ओर इनकी संख्या घटती जाती है। जब यह समुद्र में पहुँचा तो वह जमा हुआ जान हुआ और किश्ती आगे न बढ़ सका। इसको फोर्ट चिपवैन में लौट जाना पड़ा।

मकेंजी इँगलिस्तान वापस गया। इसने अब यह ठान लिया था कि देश को पार कर पैसिफिक तट पर पहुँचे। इसलिए यह इँगलिस्तान से लौटकर पीस नदी के रास्ते से रॉकी पर्वत के समीप पहुँचा। अब यह साथियों समेत अपने असबाब को कन्धे पर लादे हुए रॉकी पहाड़ को पार करने लगा। वहाँ लम्बे नुकीले पेड़ दिखाई पड़े, बीवर जानवर भी दिखाई पड़ा। जब पहाड़ के दूसरी ओर ये लोग पहुँचे तो इनको फ्रेजर नदी पश्चिम की ओर बहती मिली। इस नदी मे कुछ दूर चलकर जब इन्होंने देखा कि यह बहुत वेग से बह रही है तो ये लोग किश्ती को छोड़कर पैदल ही सन् १७९३ ई० में समुद्र के किनारे पहुँचे। यहाँ अपने पहुँचने का चिह्न रखकर ये लोग लौट पड़े। एक महीने बाद मकेंजी फोर्ट चिपवैन में पहुँचा। यही सबसे पहला अँगरेज था जिसने इस महाद्वीप को पहली बार पार किया था।

सर जॉन फ्रैंकलिन

जन्म-सन १७८६ ई०, मृत्यु-सन १८४७ ई० के लगभग

फ्रैंकलिन का जन्म लिंकनशायर में हुआ था। इसने बचपन में ही नाविक का काम आरम्भ किया था और बहुत बड़ी बड़ी लड़ाइयों में नाम पैदा कर लिया था। सन् १८१९ ई० में यह उत्तरी अमेरिका के उत्तरी हिस्से का पता लगाने के लिए भेजा गया। अनेक दुःख भोगने के पश्चात् फ्रैंकलिन सन् १८२२ ई० में विलायत वापस गया। वहाँ इसने विवाह कर लिया। इसको कप्तान की पदवी भी मिली। इसने मैकेंज़ी के मुहाने से कापरमाइन नदी तक का पता लगाना चाहा और वहाँ से समुद्र के रास्ते उत्तर-पश्चिम का राह का भी पता लगाने की इच्छा की।

सन् १८३१ ई० में फ्रैंकलिन फिर रवाना हुआ। आस-पास की जगह बारहसिंगों से भरी हुई थी। नदियों में बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े तैरते थे। किश्ती का खेना बहुत ही कठिन था। खाद्य-सामग्री नष्ट हो गई थी। लोग काई और जूतों का चमड़ा खाते थे। कभी चिड़ियाँ मिल जाती थीं तो इनको बड़ा प्रसन्नता होती था। ५००० मील चलने के पश्चात् ये लोग यार्क फैक्टरी में आये। इस यात्रा के पश्चात् फ्रैंक-

लिन विलायत गया। इसकी स्त्री मर चुकी थी, इससे इसने दुबारा विवाह कर लिया।

सन् १८३६ ई० में यह वैन डीमनलैंड का गवर्नर नियुक्त हुआ। सन् १८४५ ई० में, ६० वर्ष की अवस्था में, उत्तरी अमेरिका के उत्तरी समुद्र का पता लगाने के लिए, यह तीसरी बार रवाना हुआ। इसने अपने साथ दो जहाज ले लिये और ३ वर्ष के लिए उपयुक्त खाद्य-सामग्री भी साथ ले ली। जाड़े का मौसम आने पर यह रिले अन्तरीप में बीची द्वीप के बीच एक गुफा में टिका। पर कुछ दिनों के पश्चात् रॉस केयर्न और प्वाइंट विक्टरी के निकट इसके कपड़े और डायरी मिली जिससे ज्ञात हुआ कि यहीं कहीं आस-पास, सन् १८४७ ई० के लगभग, इसका देहान्त हुआ।

अन्तरीप को पार करके यह उत्तर की ओर बढ़ा। अब बर्फ पटन लगा लेकिन जहाज बर्फ से निकलता ही गया।

चलते चलते जहाज ८३° उत्तरी अक्षांश म पहुँचा। यहाँ जहाज को छोड़कर डाक्टर नैनसन पैदल चला। कुत्तों ने इसकी बिना पहियों की गाड़ी को वेग के साथ खींचा। अब यह ८६ उत्तरी अक्षांश म पहुँचा। यहाँ बर्फ की ऊँची दीवार खड़ी था। इससे यह आगे न बढ़ सका। लौटते समय रास्ते में सफेद भालुओं न इस पर आक्रमण किया। क्या तुम इस प्रान्त के और भयङ्कर जानवरों का नाम बता सकते हो ?

नैनसन ने बड़ी कठिनाई से अपनी रक्षा की। फ्रैंज जोसे फलैंड के पूर्वी द्वीप समूह म इसने जाड़े का मौसम सन् १८९५-९६ ई० म बिताया। फिर गर्मी पड़ते ही यह दक्षिण की ओर चला। इस खाने को कोई अनाज न मिला, इसलिए इसने यहाँ के कुत्ता, भालुओं और सील मछलियों को मारकर खाया। सन् १८९७ ई० में यह लौट आया।

सन् १९०९ ई० में उत्तरी ध्रुव का पता पहली बार एडमिरल पियरी न लगाया था। ध्रुव के बारे में वह कहता है— यहाँ भूमि नहीं है, गहरे समुद्र का उत्तरी सिरा जमकर बर्फ हो गया है और चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई पड़ती है।
